मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण जीवन

HIN-675 शोध प्रबंध

श्रेयांक: 16

स्नातकोत्तर कला (हिंदी)

की उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध

शोधार्थी

तेजा सांगटू गाँवकर

अनुक्रमांक: 22P0140034

PR Number: 201907061

मार्गदर्शक

डॉ. विपिन तिवारी

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य संकाय

हिन्दी अध्ययन शाखा

गोवा विश्वविद्यालय

अप्रैल 2024

GOA UNIVERSITY
SHENOI GOEMBAB SCHOOL OF LANGUAGES & LITERATURE
TALEIGAON PLATEAU

परीक्षक

Seal of the School

DECLARATION BY STUDENT

I hereby declare that the data presented in this Dissertation report entitled, "Mithileshwar ki Kahaniyon mein Gramin Jeevan " is based on the results of investigations carried out by me in the Discipline of Hindi at Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University under the Supervision of Dr." Bipin Tiwari" and the same has not been submitted elsewhere for the award of a degree or diploma by me. Further, I understand that Goa University or its authorities will be not be responsible for the correctness of observations/experimental or other findings given the dissertation. I hereby authorize the University authorities to upload this dissertation on the dissertation repository or anywhere else as the UGC regulations demand and make it available to any one as needed.

Teja Sangto Gaonkar

22P0140034

Date:

Place: Goa University

COMPLETION CERTIFICATE

This is to certify that the dissertation report Mithileshwar ki Kahaniyon mein Gramin Jeevan is a bonafide work carried out by Ms.Teja Sangto Gaonkar under my supervision in partial fulfilment of the requirements for the award of the degree of Master of Arts in the Discipline of Hindi at the Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University.

Dr.Bipin Tiwari

GOA UNIVERSITY
SHENOI GOEMBAB SCHOOL OF LANGUAGES & LITERATURE
TALEIGAON PLATEAU

Prof. Anuradha Wagle

Dean ,SGSLL,Goa University

School Stamp

Date:

Place:

ATMANIRBHAR BHARAT
SWAYAMPURNA GOA

गोंय विद्यापीठ
ताळगांव पठार,
गोंय – ४०३ २०६
फोन : +९१-८६६९६०९०४८

(Accredited by NAAC)

Goa University
Taleigao Plateau, Goa-403 206
Tel : +91-8669609048
Email : registrar@unigoa.ac.in
Website : www.unigoa.ac.in

Ref. No.: GU/LIB/ATTENDANCE CERT./2024/226

Date: 2/05/2024

TO WHOM SO EVER IT MAY CONCERN

This is to certify that Miss Teja Sangto Gaonkar, a student of Goa University, M.A. (Hindi), visited the Goa University Library for her reference work on the following dates and completed 22 hours & 9 minutes of research internship as a part of her M.A. dissertation.

The detailed dates and times she visited are attached herewith.

This certificate has been issued at the written request of Professor Dr. Bipin Tiwari.

2/5/24

University Librarian
(Dr. Sandesh B. Dessai)

Dr. Sandesh B. Dessai
UNIVERSITY LIBRARIAN
Goa University
Taleigao - Goa.

GOA UNIVERSITY LIBRARY GOA

VISITS TO THE GOA UNIVERSITY LIBRARY

SR. NO	DATE	TIME	HOURS
1.	20/04/2023	2:00 – 3:20	1hrs, 20mints
2.	22/06/2023	3:35 – 5:25	1hrs, 50mints
3.	11/07/2023	4:27 – 5:35	38mints
4.	13/07/2023	3:35 - 4:05	30mints
5.	26/07/2023	3:05 – 3:30	25mints
6.	02/08/2023	3:16 – 4:30	1hrs, 9mints
7.	04/08/2023	2:40 – 2:5	10mints
8.	16/08/2023	4:05 – 4:25	20mints
9.	22/08/2023	2:20 – 2:55	35mints
10.	06/09/2023	10:15 – 11:30	1hrs, 15mints
11.	12/09/2023	4:36 – 4:40	4mints
12.	16/09/2023	2:00 – 2:05	5mints
13.	30/09/2023	3:45 – 4:15	30mints
14.	27/10/2023	12:45 – 1:50	1hrs, 5mints
15.	02/11/2023	11:45 – 12:45	1hrs
16.	06/11/2023	3:00 – 3:10	10mints
17.	12/12/2023	12:25 – 12:40	15mints
18.	13/12/2023	12:20 – 1:00	25mints
19.	02/01/2024	12:50 – 1:35	45mints
20.	09/01/2024	12:45 – 12:50	5mints
21.	17/01/2024	11:15 – 11:20	5mints
22.	24/01/2024	11:25 – 12:10	45mints
23.	01/02/2024	4:18 – 4:20	2mints
24.	08/02/2024	11:40 – 12:05	25mints
25.	15/02/2024	11:40 – 12:03	15mints
26.	20/02/2024	11:00 – 11:10	10mints
27.	28/02/2024	11:25 – 11:30	5mints
28.	05/03/2024	1:55 – 2:00	5mints
29.	13/03/2024	11:42 – 12:50	1hrs, 8mints
30.	26/03/2024	4:10 – 5:00	50mints
31.	28/03/2024	10:30 – 12:50	2hrs, 20mints

32.	04/04/2024	11:23 – 12:16	53mints
33.	12/04/2024	2:35 – 4:50	2hrs, 15mints
TOTAL HOURS			**22 Hours 9 Minutes**

Signature of the Guide
Dr. Bipin Tiwari

Signature of the University Librarian
Dr. Sandesh B. Dessai

Signature of the Student
Miss Teja Sangto Gaonkar

कृतज्ञता

'मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण जीवन' विषय पर सम्पन्न यह लघु शोध प्रबंध पूरा करना संभव नहीं था यदि मुझे किसी का उत्तम मार्गदर्शन नहीं मिला होता। यह लघु शोध पूरा करने में शोध निर्देशक हिन्दी अध्ययन शाखा के डॉ. बिपिन तिवारी जी ने के सहयोग के लिए मैं उनकी आभारी हूं। मुझे जिन पुस्तकों की आवश्यकता थी वह पुस्तकें उपलब्ध करवा दी और समय-समय पर मार्गदर्शन किया।

शणैं गोंयबाब भाषा एवं साहित्य संकाय की उपअधिष्ठाता डॉ.वृषाली मांद्रेकर जी ने मुझे कहानियों के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण जानकारी दी। हिन्दी विभाग के अन्य प्राध्यापक दीपक वरक, ममता वैर्लेकर, मनीषा गावड़े, श्वेता गोवेकर तथा आदित्य दयानंद सिवाय भांगी जी ने मेरा सहयोग किया। उन सभी का के प्रति में मेरी कृतज्ञता व्यक्त करती हूं। मेरे परिवार वालों ने भी मेरा पथ-प्रदर्शन किया है,उनको भी धन्यवाद। मेरे शोध समूह सदस्य और मेरी सहेलियों ने भी मेरी बहुत मद्द की हैं।

इसके अतिरिक्त गोवा विश्वविद्यालय ग्रंथालय,कृष्णदास शामिल गोवा राज्य केंद्रीय पुस्तकालय, पणजी,से मुझे पूरा सहयोग मिला, वहां के कर्मचारियों ने मेरे विषय से संबंधित पुस्तकें ढूंढने में मेरी मद्द की और मेरा काम आसान किया। मैं सदैव उनकी ऋणी रहूंगी।

अनुक्रम

अध्याय	विवरण	पृष्ठ.संख्या
	DECLARATION	I
	CERTIFICATE	II
	कृतज्ञता	III
	अनुक्रम	4-5
	प्रस्तावना	6-8
1. हिन्दी कहानियों में ग्रामीण समाज	**1.हिन्दी कहानियों में ग्रामीण समाज** **1.1 पूर्व प्रेमचंद युगीन कहानियों में ग्रामीण समाज** **1.2 प्रेमचंद युगीन कहानियों में ग्रामीण समाज** **1.3 प्रेमचन्दोत्तर युगीन कहानियों में ग्रामीण समाज** **1.4 समकालीन कहानियों में ग्रामीण समाज** **1.5 निष्कर्ष**	9-18

2. मिथिलेश्वर की कहानियों में राजनीतिक एवं आर्थिक समस्याएं	**2. मिथिलेश्वर की कहानियों में राजनीतिक एवं आर्थिक समस्याएं** **2.1 चुनाव,वोट और कुर्सी की राजनीति** **2.2 अध्यापक वर्ग में व्याप्त भ्रष्टाचार** **2.3 भ्रष्ट व्यवस्था के प्रति तीव्र आक्रोश** **2.4 अकाल,सूखा और बाढ़ की मार** **2.5 शिक्षित बेरोजगारी** **2.6 निष्कर्ष**	19-32

3. मिथिलेश्वर की कहानियों में चित्रित किसानों की समस्याएं	3. मिथिलेश्वर की कहानियों में चित्रित किसानों की समस्याएं 3.1 बंधुआ मजदूरों की समस्याएं 3.2 खेतिहर मजदूरों की समस्याएं 3.3 किसानों का शोषण 3.4 किसानों की आर्थिक स्थिति 3.5 आजादी के बाद किसानों की स्थिति 3.6 निष्कर्ष	33-44
4. मिथिलेश्वर की कहानियों में स्त्री समस्याएँ	4. मिथिलेश्वर की कहानियों में स्त्री समस्याएँ 4.1 स्वतंत्रता के पूर्व स्त्री जीवन	45-56

	4.2 स्त्री स्वतंत्रता के बाद **4.3 निष्कर्ष**	
5. मिथिलेश्वर की कहानियों में धार्मिक एवं सांस्कृतिक समस्याएं	**5. मिथिलेश्वर की कहानियों में धार्मिक एवं सांस्कृतिक समस्याएं** **5.1 खान-पान सम्बन्धी परिवर्तन** **5.2 रहन सहन में परिवर्तन** **5.3 धार्मिक जीवन में परिवर्तन** **5.4 धार्मिक क्षेत्र में भ्रष्टाचार** **5.5 निष्कर्ष**	57-64

6. मिथिलेश्वर की कहानियों की भाषा शैली	**6. मिथिलेश्वर की कहानियों की भाषा शैली** **6.1 लोकगीत** **6.2 पात्रानुकूल भाषा** **6.3 मुहावरे एवं कहावते** **6.4 मिश्रित भाषा** **6.5 भोजपुरी शब्द** **6.6 शिल्प** **6.7 निष्कर्ष**	65-73
संदर्भ सूची	संदर्भ सूची	74-75

मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण जीवन

प्रस्तावना

मिथिलेश्वर ग्रामीण कहानीकार उपन्यासकार है, प्रेमचंद रेणु के बाद मिथिलेश्वर ने ग्रामीण समाज पर ज्यादा कहानी लिखी है। मिथिलेश्वर जी गांव में रहकर उन्होंने अपनी कहानियों में आसपास के समाज का चित्रण किया है। ग्रामीण और शहरी बदलते परिवेश को मिथिलेश्वर जी ने अपनी कहानियों में अभिव्यक्त किया है। मिथिलेश्वर जी ने ग्रामीण जीवन के हर एक पहलू को अपनी कहानियों के माध्यम से उजाकर किया है।

ग्रामीण जीवन का कोई भी रंग चाहे वह धर्म, समाज,जाति,तीज त्यौहार, लोक परंपरा,लोकगीत, संस्कृति उनकी नजर से ओझल नहीं हो पाया है। गांव से अपने जीवन का सफ़र शुरू करने वाले मिथिलेश्वर जी गांव में ही पले बड़े और उस भूमि से जुड़ते रहे हैं मिथिलेश्वर ने पारंपरिक और परिवर्तित गांव के दोनों रूपों को दिखाया है।

मिथिलेश्वर जी ने गांव के लोगों की समस्याओं का चित्रण अपनी कहानियों में किया है। मिथिलेश्वर जी के साहित्य का केंद्र बिंदु ग्रामीण जीवन रहा है। उनकी कहानियों की मूल संवेदना ग्रामांचलिक जन-जीवन की पीड़ा है । उनकी कहानियों पर प्रेमचंद की विचारधारा का प्रभाव दिखाई देता है। मिथिलेश्वर जी के हृदय में अपने ग्राम के प्रति अपने लोगों के प्रति एक विशेष

स्थान है।‘गांव का मधेसर’कहानी में ग्रामीण लोगों के भोलेपन सरल स्वभाव के प्रति सचेत होते हुए दलितों, कृषकों की समस्याओं को भी चित्रित किया गया है।

मिथिलेश्वर जी ने तत्कालीन राजनीति पर भी गहराई से प्रकाश डाला है। उन्होंने अपने कथा साहित्य में धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन के पक्ष को उद्घाटित करते हैं। मिथिलेश्वर जी अपनी कहानियों के माध्यम से ग्रामीण यथार्थ को सच्चाई और ईमानदारी से हमारे सम्मुख रखते हैं।

आंचलिक साहित्य की ओर प्रेरित होना बहुत बड़ा संयोग है । बी.ए पढ़ाई करते समय श्री मल्लिकार्जुन महाविद्यालय, काणकोण में अनेक विधाओं की रचनाओं को पड़ा। इस समय मिथिलेश्वर जी का ‘एक थे प्रो.बी.लाल’कहानी संग्रह की कहानियों को पढ़ा। मेरा जीवन गांव से जुड़ा हुआ है इसीलिए इस कहानी संग्रह में चित्रित समस्याएं मुझे अपने गांव से जुड़ी हुई लगती है। इस कहानी संग्रह में’गांव का मधेसर’इस कहानी में मधेसर जाति प्रथा का एक प्रकार से विरोध करता है। इस कहानी में गांव के बदलते हुए तेवर दिखाई देता है। गांव का प्रकृति वर्णन मिथिलेश्वर जी बखूबी किया है। इससे प्रभावित होकर ग्रामीण विचारधारा पर लिखे जानेवाले साहित्य पर ही मुझे शोध कार्य करना चाहिए ऐसा मैंने मन में ठान लिया है।

मिथिलेश्वर की कहानियों की प्रासंगिकता

इस शोध कार्य का उद्देश्य ग्रामीण समाज में वर्ग संघर्ष की जो समस्या चली आ रही है उसको प्रस्तुत करना है। ग्रामीण समाज में हमें आज भी उच्च वर्ग के द्वारा निम्न वर्ग का निरंतर शोषण होता है तथा उनको दबाने की कोशिश हमेशा ही जारी रहती है। आज के युग में पैसा ही

ज्यादा महत्ता रखता है और मनुष्य की कोई एहमियत नहीं रह गई है। आपसी संबंध भी मनुष्य की आर्थिक स्थिति को देखकर ही स्थापित किए जाते हैं। सभी पैसे की भागदौड़ में एक दूसरे से आगे निकलने की चाह में फंसे हुए हैं। आपसी संबंधों के टूटने का सबसे बड़ा कारण पैसा ही बन रहा है।

मजदूर, किसान, छोटे व्यवसाय करने वालों के जीवन में दरिद्रता आती है। कहीं बार उन्हें जेवर,खेती पशु भेजने पड़ते थे। सेठ साहूकारों से कर्ज लेना पड़ता था। कर्ज़ा चुकाते-चुकाते अनेक पीढ़ियां बर्बाद हो जाती है । पूंजीपति, जमींदार,सेठ, साहूकार उनकी इस मजबूरी का फायदा उठाते हैं। वर्तमान समय में शोषण करने के तरीके बदल गए हैं। नेताओं की स्वार्थी और भ्रष्ट मनोवृत्ति के कारण सरकारी अधिकारी इनमें शरीक है। इनकी मिली भगत के कारण ग्रामीण लोग सुविधाओं से कोसों दूर है। शोध कार्य में आधुनिक ग्रामीण समाज की समस्याओं को मूल में रखकर विचार किया जाएगा। गांव में आज भी जातियता, वर्ग व्यवस्था , मज़दूरों का शोषण, स्त्री शोषण, दलितों का शोषण हो रहा है। इसके बावजूद गांव में आज भी जिंदगी की बुनियाद बसती है। उपर्युक्त विषयों को मेरे शोध प्रबंध के माध्यम से गंभीरतापूर्वक पूर्वक समझा जा सकेगा।

प्रथम अध्याय

हिंदी कहानियों में ग्रामीण समाज

हिन्दी कहानियों में ग्रामीण समाज

"कहानी उतनी ही पुरानी है जितनी मनुष्य की बोली या भाषा। जब मनुष्य बोलने लगा तब मौखिक कहानी का जन्म हुआ और जब वह लिखने लगा तब लिखित कहानी का जन्म हुआ। भारत में कहानी परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है। पंचतंत्र, बौद्ध, जातक कथाएं, वैताल कथाएं, बत्तीस पुतलियों की कथाएं, हितोपदेश कथाएं, रामायण, महाभारत की कथाएं, पुराणों तथा चौरासी वैष्णवन की कथाएं आज भी उपलब्ध है।"[1] कहानी आज सभी विधाओं में एक सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है। डॉ. विवेकी राय के अनुसार उन्नीसवीं शताब्दी तक पहुंचते पहुंचते समूचे विश्व साहित्य में कहानी कला अपने नव-विकसित, परिनिष्ठित, प्रभावशाली, कलात्मक और जीवनसाथी स्वरूप विकास को लेकर जहां पूर्णता की एक सीमा तक पहुंच,वहां इस सदी के अंतिम नवजागरण चरण में अंग्रेजी-साहित्य के प्रभाव से हिंदी कहानी ने भी अपने कवित्वमय, सर्वात्मवादी, विनोदवादी,अतिमानवीय अतिभावुक सुधरपरक,सीधे-सादे सपाट और ढीले-ढाले तथा बोझिल पुरातन शिल्प को विसर्जित कर नये रूप में खड़ा किया।" [2] हिंदी कहानी में ग्रामीण समाज का अध्ययन करने के लिए कहानी सम्राट प्रेमचंद को केंद्र बिंदु बनाकर हिंदी कहानी को काल खण्डों में विभाजित किया जा सकता है।

1.1 पूर्व प्रेमचंद युगीन कहानियों में ग्रामीण समाज

1.2 प्रेमचंद युगीन कहानी में ग्रामीण समाज

1.3 प्रेमचन्दोत्तर यूगीन कहानियों में ग्रामीण समाज

---

[1] डॉ. सुकुमार भंडारे, हिंदी कहानी आदि से आज तक,अमन प्रकाशन,राजबाग कानपुर 2015।

[2] डॉ. हीरालाल शर्मा, डॉ. महेन्द्र, सामाजिक परिवर्तन में कथा साहित्य की भूमिका, अनंग प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2003,पृ.113।

1.4 समकालीन कहानियों में ग्रामीण समाज

1.1 पूर्व प्रेमचंद युगीन कहानियों में ग्रामीण समाज

प्रेमचंद पूर्व भी भी कहानियों में ग्रामीण जीवन दिखाई देता है। रेवरेन्ड जे न्यूटन कि 'एक जमींदार का दृष्टांत' कहानी में वर्णित विषयों में किसानों कि अबोधता, जमींदारों द्वारा किसानों का शोषण, किसानों तथा जमींदारों के मध्य का तनाव,महाजनों द्वारा कभी-कभार की गई मद्द आदि इस कहानी में है। माधवराव सप्रे कि कहानी 'एक टोकरी भर मिट्टी' हिंदी की प्रथम मौलिक कहानी है। जमींदार द्वारा अपने महल के अहाते के लिए बुद्धि विधवा की झोपड़ी हटाने और जमींदार की आंख खुलने के पश्चात् झोपड़ी की जमीन वापस करने की कहानी है। डॉ.सत्यकाम के अनुसार 'एक टोकरी भर मिट्टी' प्रतीकात्मक कहानी है। ऊपर से यह कहानी जमींदार के जुल्म की प्रतीत होती है परंतु असल में कहानी मातृभूमि से लगाव का प्रतीक है। एक टोकरी पर मिट्टी प्रतीक है पूरे देश की मिट्टी का।"[3]

1.2 प्रेमचंद युगीन कहानियों में ग्रामीण समाज

"इस दौर के अनेक लेखकों की तरह प्रेमचन्द भी इतिहास के इसमें चक्र में बंधे थे।और अपने रचनाकर्म के आरम्भिक दौर में काफी दिनों तक उन्होंने भी इसी ऐतिहासिक सीमा में भारतीय अस्मिता की खोज की। किन्तु प्रेमचन्द की विशिष्टता यह है कि वे बहुत जल्द ही इस प्रदत्त भारतीयता की सीमा से मुक्त होने में समर्थ हो सकें। शायद इसलिए कि पश्चिम को ज्ञान का फल उन्होंने कम ही चखा था;किन्तु इससे भी ज्यादा इसलिए कि जनजीवन में उनकी जड़े

[3] सरस्वती पाण्डेय, गोविन्द पाण्डेय, हिन्दी भाषा एवं साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, 2022, पृ. 310।

ज्यादा गहरी थी। उनकी रचनाओं में इस बात के पर्याप्त संकेत मिलते हैं कि 1918 के आसपास प्रेमचन्द के दृष्टिकोण में गहरा परिवर्तन आया। यह वही समय है जब गांधी जी भारतीय राजनीति में आए और रूस में पहली समाजवादी कान्ति हुई। प्रेमचन्द ने 1918 में 'स्वदेश' के प्रदेशांक के सम्पादकीय में लिखा:'हिन्दुस्तान का उद्धार हिन्दुस्तान की जनता पर निर्भर है।' फिर 1919 में जमाना में 'पुराना जमाना:नया जमाना' शीर्षक लेख में पोषित किया कि आनेवाला जमाना जब किसानों और मजदूरों का है।"[4]

"हिंदी कहानी के क्षेत्र में प्रेमचंद का उदय एक महत्वपूर्ण घटना है। हिंदी कहानी में भारतीय ग्रामीण जीवन के परिवेश एवं उनकी समस्याओं का जैसा चित्रण प्रेमचंद ने किया है, वह हिंदी में क्या, अन्य भारतीय भाषाओं में भी दुर्लभ है।'प्रेमचंद जिस सामाजिक बोध को लेकर हिंदी कहानी रचना कर रहे थे, उनके समकालीन प्रसाद उसी समय वैयक्तिक बोध से संपृक्त कहानियों की ओर प्रवृत थे। प्रेमचंद की कहानी कला के केंद्र में ग्रामीण चेतना सर्वप्रमुख है, यही कारण है कि उन्हें भारतीय ग्रामीण जीवन का 'चितेरा'कहां गया है। प्रेमचंद अपने समय के समस्त कहानीकारों से अलग सर्वाधिक ध्यान इसी अर्थ में आकृष्ट करते हैं कि उन्होंने अपनी ग्रामीण कहानियों में, ग्रामीण समस्याओं की तरफ ध्यान प्रमुखता से आकृष्ट किया है।"[5]

प्रेमचंद नहीं सामाजिक यथार्थ की परंपरा को विस्तार दिया। यह युग भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के गांधी युग के समानांतर चलता है। इसी से गांधी युगीन विचारधारा का प्रभाव इस युग की कहानियों पर अलग-अलग रूप में व्यक्त हुआ है। गांधीजी के प्रभाव के कारण प्रेमचंद

---

[4] नामवर सिंह, प्रेमचन्द और भारतीय समाज, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2010,पृ. 68।

[5] डॉ.हीरालाल शर्मा, डॉ.महेन्द्र, सामाजिक परिवर्तन में कथा साहित्य की भूमिका, अनंग प्रकाशन दिल्ली, 2003, पृ.134।

युग में आदर्शवादी कहानियों की एक लंबी सूची दिखाई देती है। “प्रेमचंद जी ने अपनी कहानियों में भारतीय ग्रामीण जीवन को रेखांकित किया है। ग्रामीण जीवन का चित्रण ‘गोदान’ उपन्यास में देखा जा सकता है। “कफन’,‘पूस की रात’, ‘बुद्धि काकी’,’सद्गति’,’अलग्योझा’आदि कहानियों में ग्रामीण जीवन की सामाजिक कुरीतियों, प्रथाओं के खोखलेपन,अत्याचारों और उन अत्याचारों को सहते जाते निस्सहाय कृषकों एवं ग्रामीण जनों का सजीव चित्र उपस्थित हुआ है।”[6] डॉ.हरिशंकर दुबे कहते हैं कि, “प्रेमचंद जी की रचनाओं में आंचलिकता का प्रयोग साध्य के रूप में न होकर साधन के रूप में हुआ है । आंचलिकता उनकी कथा की मूल में नहीं है। कथाओं में सजीवता पैदा करने के लिए आंचलिकता का आसरा लिया गया है।”[7] प्रेमचंद की कहानियों में भाषा और प्रकृति वर्णन की दृष्टि से आंचलिकता के दर्शन होते हैं। आंचलिकता का सर्जन का मूल तत्व ग्राम्य संस्कृति का विशद वर्णन है।‘पंच परमेश्वर’ कहानी में ग्रामीण जीवन किसानों का उदारता और काइयांपन का चित्रण है। अंत में गांधीवादी आदर्श की स्थापना है। ‘पूस की रात’ उनकी चरम यथार्थवादी कहानियों में शुमार की जाती है। इसमें प्रेमचंद हल्कू नामक किसान के माध्यम से दिखाते हैं कि गरीब किसान को अपनी फसल की रक्षा के लिए कैसे कठिनतम स्थितियों का सामना करना पड़ता है जबकि उच्च वर्ग के लोग बिना कठिन परिश्रम के भी आरामदायक जीवन जीते हैं। प्रेमचंद जी ने अपनी कहानियों में ग्रामीण परिवेश को उभारा है। प्रेमचंद ने शुरुआती कहानी आदर्शवादी लिखी जैसे-जैसे समय बितता गया प्रेमचंद जी की कहानियों में परिवर्तन आ गया।

---

[6] डॉ.महेन्द्र रघुवंशी, कहानीकार मिथिलेश्वर एवं आनंद यादव, विद्या प्रकाशन,2014,पृ.39,40।
[7] डॉ.हरिशंकर दुबे, फणीश्वरनाथ रेणु: व्यक्तित्व एवं कृतित्व, विकास प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 1992,पृ.147।

वे यथार्थवादी कहानियां लिखने लगे। यह यथार्थवाद उनकी कहानियों में भी देखने लगा है। उनकी कहानियों की विशेषता है कि उनमें घटना के साथ-साथ चरित्र चित्रण को भी उतना ही महत्त्व दिया जाता है। उन्होंने निम्न वर्ग का यथार्थ एवं सजीव चित्रण किया है।

1.3 प्रेमचन्दोत्तर युगीन कहानियों में ग्रामीण समाज

"प्रेमचंदोत्तर काल हिंदी कहानी का पूर्ण उत्कर्ष काल है। इस काल में हिंदी कहानी की दो धाराएं क्रमशः 'सामाजिक यथार्य' और 'व्यक्तिवाद' की विकसित हुई। यशपाल, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', अमृतलाल नागर आदि पहली धारा के तथा जैनेन्द्र और अज्ञेय दूसरी धारा के अग्रणी कहानीकारों में उल्लेखनीय है। जैनेन्द्र, यशपाल और अज्ञेय ने इस कालवधि को विशेष रूप से प्रभावित किया है।"[8] प्रेमचंद के बाद हिन्दी कहानियों में आंचलिकता की लहर उठी जिसमें फणीश्वरनाथ रेणु, नागार्जुन, रांगेय राघव, मार्कंडेय, आदि कहानीकारों की सुदृढ़ परंपरा को आगे बढ़ाया है। उनकी कहानियों में गांव की मिट्टी की महक और गांव के लोगों का जीवन देखने को मिलता है।"शिव प्रसाद सिंह की पहली कहानी 'दादी मां के बाद' 'प्रायश्चित','वशीकरण','माटी की औलाद', 'रेती', 'कर्मनाशा की हार', 'बीच की दीवार मुर्दा सराय' आदि कहानियों में गांव की मिट्टी की महक आती है। उन्होंने गांव की मिट्टी से बने ऐसे चरित्रों को चुना है, जिन्हें पता है कि उनके घर में क्या होता है,संबंधों का अर्थ और धर्म क्या है? गांव की जड़ता और मुक्त होती हुई जड़ता दोनों भंगिमाएं उनकी कहानियों में आ जाती है। मार्कंडेय अपनी कहानियों में ग्रामीण जीवन की गरीबी, कंगाली, भुखमरी,अभाव, महाजनी

---

[8] डॉ. हीरालाल शर्मा, डॉ. महेन्द्र, सामाजिक परिवर्तन में कथा साहित्य की भूमिका, अनंग प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2003,पृ.114,115।

व्यवस्था के शिकार लोग, ढोंगी बाबाओं के शिकार ग्रामीण पुरुष स्त्री आदि का अपनी कहानियों में कथ्य बनाया है।"[9] इस युग की कहानीकारों ने व्यक्ति- मानस की गहराइयों को नापा तथा मानवीय समस्याओं को अपने लेखन का केंद्र बिंदु बनाया है। इस युग में भी स्त्री-वर्णन की अधिकता रही लेकिन यहा स्त्री प्राचीन स्त्री से भिन्न है ।

1.4 समकालीन कहानियों में ग्रामीण समाज

"सन् '50 के बाद के समय की कहानी अर्थात् नई कहानी और उसकी परवर्ती कहानी की संवेदना मुख्यतः नगर या महानगर केंद्रित हो गई। जो कहानीकार ग्रामीण जीवन-परिवेश छोड़कर नगर या महानगर में जा बसे थे, उनकी कहानियों में गांव छोड़ने का दर्द या गांवों के परिवेश और जीवन-मूल्य छूट जाने की व्यथा बड़ी गहराई से चित्रित हुई है। ग्रामीण कथालेखन में समस्त अभावों के बावजूद जिन कथाकारों ने ग्रामीण जीवन-परिवेश के चित्रण में अपनी निश्चित पहचान कायम की, उनमें फणीश्वरनाथ रेणु, शिवप्रसाद सिंह, भैरवप्रसाद गुप्त, कमलेश्वर, मार्कण्डेय, भीमसेन त्यागी, रामदरश मित्र, गोविंद्र मिव, विवेकीराय, चंद्रप्रकाश पांडेय, प्रभु जोशी, मणि मधुकर, मधुकरसिंह, असगर वजाहत, मिथिलेश्वर, जगवीर सिंह वर्मा आदि के नाम विशेष महत्त्वपूर्ण हैं।"[10]फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियां आंचलिकता के रंग में रंगी हुई पूर्णिया जिले की जीवंत तस्वीर प्रस्तुत करती है। फणीश्वरनाथ रेणु, मार्कंडेय और शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में ग्रामीण चेतना मिलती है। रेणु जी ने गांव को एक चेतन सत्य के रूप में चित्रित किया है। रेणु प्रेमचंद के बाद ग्रामीण जीवन के सबसे प्रमुख कथाकार है। मधुकर सिंह,मणि

[9] डॉ.रमेश जगताप, मिथिलेश्वर के कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन: एक अध्ययन, चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर,2014,पृ.39।
[10] पुष्पपाल सिंह, समकालीन कहानी नया परिप्रेक्ष्य, सामयिक बुक्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2011,पृ.166 ।

मधुकर,आलमशाह खान, मिथिलेश्वर, जगवीर सिंह वर्मा आदि की कहानियों में स्वतंत्रता के बाद गांव-समाज का परिवर्तित परिवेश पूर्णत: आधुनिक समस्याओं के परिपेक्ष में देखा गया है। राजनीति में गांव का महत्त्व बढ़ जाने से वहां भी चुनाव आदि की गलाजत बड़ी है। फलत: इन कहानीकारों ने गांव के आदमी की कल्पना की तस्वीर को मंजीत कर,उसकी सही तस्वीर प्रस्तुत की है। मार्कंडेय की ग्रामांचल की कहानियों में भी शुरू में अतीतोन्मुखता ही दिखाई पड़ती है। 'गुलरा के बाबा'और 'हंसा जाई अकेला' में अतीत के प्रति रोमानी दृष्टिकोण अख्तियार किया गया है। बाद में उन्होंने गांव में उगते हुए वर्ग संघर्ष को पहचानने और चित्रित करने की भी कोशिश की है। शहरी जीवन से संबंध कहानी भी उन्होंने लिखी है,पर ऐसा लगता है कि वह विषयवस्तु उनके घेरे के बाहर है। 'महुए का पेड़', 'हंसा जाई अकेला', 'भूदान', 'माही' आदि उनके प्रकाशित कहानी संग्रह है। इस युग के कहानीकारों ने समाज को माध्यम बनाकर व्यक्ति के समक्ष समस्याएं प्रस्तुत की है। समाज में अनास्था,कुंठा, निराशा के भाव, खोखलेपन, नैतिक पतन, तनाव,घुटन भरी जिंदगियों को कहानियों का माध्यम बनाया गया है ।

समकालीन कहानीकारों की अभिरुचि यथार्थ को उसकी पूर्ण भयावहता में प्रस्तुत करने में रही। यह यथार्थ की अनछुई स्थितियों और अनदेखे क्षेत्रों की तल्ख सच्चाइयों को पूरी बेबाकी से अभिव्यक्त करता है। यथार्थ की जिस प्रामाणिकता की बात नई कहानी में की गई, वह प्रामाणिकता सबसे अधिक समकालीन कहानी में प्राप्त हुई है। इसलिए ये कहानियां जिंदगी की सच्चाइयों के इतनी निकट हैं। कहानियों की जिंदगी असली जिंदगी से इतनी समरूप पहले कभी नहीं रही थी। समकालीन कहानीकारों की दृष्टि केवल यथार्थ की स्थितियों के चित्रण तक

ही सीमित नहीं है, अपितु वह उन कारणों की तह में जाता है जो वर्तमान स्थितियों के लिए जिम्मेदार हैं। कहानीकारों की इस प्रवृत्ति ने कहानी को अतिशय बौद्धिक बना दिया। इसलिए आज कहानी में यथार्थ इस रूप में व्यक्त है कि वह मानवीय सोच को उभारता है। यथार्थ की सच्चाई के साथ समस्याओं के प्रति लेखकीय सोच या दृष्टि आज प्रत्येक अच्छी कहानी में प्राप्त होती है।

1.5 निष्कर्ष

हिन्दी की आंचलिक कहानियां अपने बहुआयामी संदर्भों और आयामों में आज मात्र एक ललित विधा नहीं रह गई है अपितु एक गंभीर बौद्धिक विमर्श की विधा है। कहानियों में ग्रामीण यथार्थ का चित्रण बहुत गहराई बहुआयामी रूप में हुआ है। आंचलिक कहानियों में ग्राम संस्कृति और ग्राम जीवन का परिचय है। प्रेमचंद पूर्व कहानीकारों ने स्त्री समस्याओं का चित्रण किया है। प्रेमचंद जी ने अपनी कहानियों के द्वारा स्त्री की दयनीयता का चित्रण कर उन्हें इससे ऊपर उठने के लिए नई दिशा प्रदान की है। उसके बाद धीरे-धीरे स्त्रियों का जागरूक एवं विकसित रूप दिखाई देता है। प्रेमचंद युग के कहानीकारों का उद्देश्य था कि ग्रामीण लोगों की समस्याओं से परिचित कर उन्हें जागरूक एवं सचेत करना ताकि वह अपने प्रतिष्ठा की लड़ाई खुद लड़ सके। प्रेमचंद युगीन से लेकर आज तक के कहानीकारों ने ग्रामीण जीवन की समस्याओं का चित्रण किया है। समकालीन कहानीकारों ने समाज के स्थित सर्वहारा तथा सभी यथार्थ पात्रों का चित्रण किया है।

द्वितीय अध्याय

मिथिलेश्वर की कहानी में राजनीतिक एवं आर्थिक समस्याएं

मिथिलेश्वर की कहानियों में राजनीतिक एवं आर्थिक समस्याएं

भारत को अंग्रेजों के शासन से आजादी मिलने के बाद राजनीतिक नेतृत्व ने देश में सुधार और विकास लाने की योजना बनाई पर वह योजना सफल नहीं हुई। भारतीय जनता ने सरकार से बहुत सारी उम्मीदें लगाई लेकिन भारतीय जनता का मोहभंग हुआ। भारतीय नेताओं ने स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण अपने ही घर भरने शुरू किये। भारतीय समाज अनास्था के गर्ते में चला गया सत्ता का लालच बहुत बुरा होता है। कुर्सी के लालसा लग गई। स्वतंत्रता के साथ-साथ जमींदारी प्रथा भी खत्म कर दी गई और यह मान लिया गया कि अब किसानों का शोषण खत्म हो जाएगा। लेकिन सत्य इसके विपरीत है। जमींदारों ने अपनी ज़मीनों को कानून के शिकंजे से बचकर अपने वर्चस्व को कायम रखा है। उन्होंने राजनीति को व्यवसाय के रूप में अपना लिया है और अथवा राजनीति से ऐसे जुड़ गए हैं कि उनके हितों की रक्षा होती रहे और वह अपने शोषण के नए-नए तरीके ईजाद कर सकें। श्रमिक,मजदूर तथा किसानों का शोषण पहले से हो रहा है। जिससे विद्रोह की चिनगारी कभी-कभी उठाती है। गांव में गरीबी, शिक्षा,बिजली की समस्या, स्वास्थ्य चिकित्सा, नयी और पुरानी पीढ़ी का संघर्ष आदि समस्याएं हैं।

“आधुनिक हिन्दी कहानी के युगीन संदर्भों को यदि देश की राजनीतिक स्थितियों के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित किया जाए तो स्पष्ट होगा कि कहानी में प्रत्येक महत्वपूर्ण राजनीतिक घटना,हलचल और क्रिया-कलाप का अवश्यंभावी प्रभाव पड़ा है। कहानीकार जिस जीवन-परिवेश में रहता है, प्रत्येक दृष्टि से राजनीति से प्रभावित है। आधुनिक कहानी की मूलभूत

विशेषता है यथार्थ के प्रति प्रतिश्रुति या प्रतिबद्धता और आज याथार्थ को सामाजिक और राजनीतिक विभाजन के पृथक-पृथक खानों में नहीं रखा जा सकता है। वह आज इस रूप में मिला-जुला है कि यह कहना कठिन है कि स्थिति विशेष के लिए सामाजिक या राजनीतिक कारण उत्तरदायी है।"[11]

राजनीति में वही आदमी सफल है, जो या तो एक नंबर का गुंडा है या फिर गुंडा संस्कृति को संरक्षण प्रदान करता है। इस स्थिति को आधुनिक कहानी में व्यंग्य के धरातल पर सशक्त रूप में चित्रित किया गया है।

मिथिलेश्वर जी कि, 'सो दुविधा पारस नहीं जानते' कहानी में इसी व्यवस्था का चित्रण किया गया है। एक तरफ दयाशंकर जैसा समाजसेवक है जिसका सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र सेवा और जनकल्याण के लिए समर्पित है। जनसेवा ही उनका सच्चा धर्म है। दूसरी और इन्द्रदेव जैसा नेता सत्ता पाने के लिए राजनीति को भ्रष्टाचार के रूप में देखा है। दयाशंकर को यह चिंता है कि जब रक्षक को ही भक्षक की गद्दी पर बैठा दिया जाए,तो कैसे सहें? सचमुच यह वेदना और असहनीय है । सत्ता के लोभ में राजनीति तो भ्रष्ट हो ही चुकी है,वह विभिन्न नियुक्तियों एवं अनुशंसाओं द्वारा देश और समाज को ही बर्बाद करने पर तुली हुई है। इन्द्रदेव एक ऐसा व्यक्ति हैं जिस पर पिछली सरकार के शासनकाल में हत्या,बलात्कार,अपहरण और लूट के अनेक मुकदमे दर्ज हैं फिर भी राजनेता बन जाता है।

[11] पुष्पाल सिंह,समकालीन कहानी नया परिप्रेक्ष्य, सामूहिक बुक्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण:2011,पृ.287।

मिथिलेश्वर जी ने अपनी कहानियों में सरकारी तंत्र,नौकरशाही एवं पुलिस की दमनकारी प्रवृत्तियों को व्यक्त करने का प्रयत्न किया है। मिथिलेश्वर की कहानी 'सो दुविधा पारस नहिं जानत' में पुलिस थाने के नजदीक स्थित उसे गोदाम को लूट लिया जाता है। बाद में यह पता चला कि इस लूट में इन्द्रदेव ने पुलिस को भी उसका पर्याप्त हिस्सा दिया था। पुलिस विभाग में भी भ्रष्टाचार फैला हुआ है। उनके तबादले सिफारिशें और रिश्वत से किए जाते हैं। पुलिस निम्न वर्ग के लोगों का शोषण करती हैं। पुलिस उनपर झूठे आरोप लगाती है और उन्हें जेलों में बंद कर देती हैं। मिथिलेश्वर जी की 'उम्र कैद'ऐसी ही कहानी है। कहानी का नायक सरना आर्थिकता और गरीबी के कारण चोरी,डकैती करता है। उसे पुलिस पकड़ लेती है। "सरना को अच्छी तरह याद है,थाने के दरोगा ने पुलिस के दो तगड़े सिपाहियों से उसे अच्छी तरह पिटवाया था। उनकी बेंतें टूट गई थी,वह थककर हांफने लगे थे। फिर नये बेंत लिए दूसरे सिपाही आए थे। वह दौड़कर दरोगाजी के पैरों पर गिर पड़ा था। वह गरज पड़े थे, "साले,अब भी सच-सच बता दे,और कौन-कौन थे तुम्हारे साथ"? और वह कह उठा था,"महुंगु मिसिर, रामदयाल पांडे, जोगिन्दर सिंह तथा भिखारी राम। लेकिन यह क्या? इन लोगों के नाम सुनते ही दरोगाजी फनफनाकर कुर्सी से उठे थे और उस पर कसकर एक लात जमाते हुए बोले थे, मादर... चुतिया, बड़े आदमियों को फंसाना चाहता है। नहीं जानता है कि वे सब रईस घराने के हैं। भला वह चोरी करेंगे। और नये बेंतों वाले सिपाही उसे पर टूट पड़े थे। झूठ ही सही,जान बचाने के लिए उसने असर्फी दुसाध,रामबचन चमार तथा ठगु रजवार का नाम रख दिया था।"[12] इससे पता चलता है कि पुलिस भी साहूकारों,जमींदारों तथा बड़े लोगों का पक्ष लेती है। गरीब, निम्न वर्ग के लोगों

[12] मिथिलेश्वर,मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियां (भाग एक), इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन,दिल्ली, 2015,पृ.264,265।

की बात सुनी नहीं जाती है। अंग्रेजों के शासनकाल में साहूकार तथा जमींदार गरीब लोगों का शोषण करते थे। स्वतंत्रता के बाद राजनेता,सरकारी अधिकारी,पुलिस गरीब लोगों का शोषण करते हैं।

'एक सड़क और तीन सौदेबाज' कहानी सड़क की आत्मकथा के रूप में लिखी गई है,जिसमें सरकारी नवनिर्माण योजनाओं की पोल खोली गई है। ठेकेदार, इंजीनियर और नेता मिलकर भ्रष्टाचार का बीज वपन करते हैं और धीरे-धीरे वह पौधा वृक्ष बनकर राष्ट्र की नींव को कमजोर तथा जर्जर कर डालता है। नेता के बारे में कहां गया है-"वह जिसकी नजर उठाकर देखता,वह हाथ जोड़े नजर आता। जिस अफसर को जो संकेत देता,वह अफसर तत्काल उसका पालन करता। उसके साथ के लोग उसकी सेवा में बराबर तत्पर रहते। वह जब जिस चीज की इच्छा प्रकट करता,लोग तत्क्षण उसकी पूर्ति करते हैं।"[13] गांव को उखड़न में गांव की राजनीतिक अधिक उत्तरदायी है। राजनीति ने गांव वातावरण अत्यधिक दूषित तथा गंदा बनाया है। गलत राजनीति के बहके हुए गांव अपनी असलियत से कहीं दूर भागे हुए हैं। गांव की इकाई टूट गयी है। दलबन्दी,पार्टी ने उसे अनेको गुटों में विभाजित किया है। ईर्ष्या, वैमनस्य, संघर्ष, उच्च-नीच का घेरा आदि ने गांव को विषाक्त बनाया हैं। राजनीति ने गांव को तो भी विघटित कर रखा हैं,परिवार को भी विघटित करने में उसने कोई कसर नहीं रखी है। 'आहत दर्प'को राजनीति भाई-भाई के रिश्ते को भीषण धक्का देती है। झूठी राजनीतिक प्रतिष्ठा के लिए मातृत्व परास्त होता हुआ दिखाई देता है।" डॉ.वर्षा मिश्र 'हरिहर काका' कहानी संग्रह के संदर्भ में लिखती है गांव और नगर दोनों के बदलते स्वरूप एवं वहां के जंगलीपन क्रूरता और

[13] मिथिलेश्वर, मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियां,(भाग दो), इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, 2015।

अमानवीयता का चित्रण है। हर तरफ आदमी असहाय और लाचार है। अपराध,हिंसा और अनाचार का तांडव नृत्य हो रहा है। प्रतिरोध करने की शक्ति किसी में नहीं है। जिनके हृदय में दया,करुणा और विवेक है वहां असहाय है और अन्ततः मानसिक संतुलन गंवा देने के लिए अभिशप्त है।"[14]

2.1 चुनाव,वोट और कुर्सी की राजनीति

"आज राजनेता लोक-सेवा से अधिक अपने लिए चुनाव का जुगाड़ करने, वोट और कुर्सी हथियाने के लिए ही सारी जोड़-तोड़ करता रहता है। पहले दल का टिकट प्राप्त करने के लिए धरती और आकाश के कुलाबे मिलाते हुए प्रयत्न करना, फिर चुनाव में साम, दाम, दंड, भेद, जाति-पांति सभी अस्त्रों का प्रयोग कर वोट प्राप्त करना, चुनाव जीतने पर कोई कुर्सी, विशेषतः मंत्री-पद, हथियाना और फिर सत्ता के केंद्र में बने रहने के लिए विविध रूपों में प्रयत्नशील रहना, आदि राजनीतिकों के जाने-पहचाने पैंतरे हैं। कहानीकार इन सब स्थितियों का प्रत्यक्षदर्शी और भुक्तभोगी है। इसलिए आज कहानियों में इन भ्रष्टताओं का सटीक चित्रण प्राप्त होता है।"[15]मिथिलेश्वर जी ने अपनी कहानी 'सो दुविधा पारस नहिं जानत'इन भ्रष्टताओं का सटीक चित्रण किया हैं। कहानी में दयाशंकर कहते हैं कि "राजनीतिक दल के अन्दर रहकर इन्द्रदेव पहले ही अपेक्षा ज्यादा उत्पात करता रहा। लेकिन अब अपराधकर्मी के रूप में नहीं,एक सबल प्रतिपक्षी कार्यकर्त्ता के रूप में उसकी चर्चा होती। कुछ समय बाद चुनाव की घोषणा हुई। इन्द्रदेव ने अपनी कार्य-प्रणाली तेज कर दी। अपने दल को विजयी बनाने के लिए जगह-जगह

[14] मिथिलेश्वर, मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण यथार्थ, क्वालिटी बुक्स, रामबाग, कानपुर, प्रथम संस्करण:2004।
[15] पुष्पपाल सिंह, समकालीन कहानी नया परिप्रेक्ष्य, सामयिक बुक्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2011,पृ.294।

बूथ कैप्चर करने से लेकर अनेक हत्याएं करते हुए लोगों को आतंकित कर उनका मत हासिल करने के लिए उसने एड़ी-चोटी का पसीना एक कर दिया। इन्द्रदेव के लिए यह सुखद संयोग ही साबित हुआ कि उसका दल भारी बहुमत से जीत गया और पिछली सरकार को हटा सत्तासीन हो गया। सत्ता में आते ही इन्द्रदेव के दल ने उसके ऊपर से सारे मुकदमे उठा लिए तथा उसे सच्चा राष्ट्रसेवी और नयी आजादी का प्रणेता तथा क्रान्तिकारी घोषित किया। इसके बाद उसे एक महत्वपूर्ण पद भेंट करते हुए अब जगह-जगह उसके अभिनन्दन समारोह का आयोजन शुरू कर दिया है।"[16]यह कहानी राजनीति के इस पहलू को खूब उजागर करती है। सत्ता में आ जाने पर यदि कोई राजनेता सत्य का पक्ष लेकर सच्ची बात कहने का दुस्साहस करता है तो वह कुर्सी या पद द्वारा खरीद लिया जाता है।

2.2 अध्यापक वर्ग में व्याप्त भ्रष्टाचार

"आधुनिक कहानीकार की दृष्टि राजनेताओं, व्यवस्था, पुलिस और औद्योगिक प्रतिष्ठानों की भ्रष्टताओं पर ही नहीं अपितु अध्यापक, दुकानदार, आदि समाज के अन्य वर्गों में फैले भ्रष्टाचार और उनकी अपनी 'राजनीति' पर भी गई है।"[17] मिथिलेश्वर जी ने अध्यापकीय जीवन पर 'अध्यापन' कहानी की रचना की है। इस कहानी में उनका यह जाना-पहचाना क्षेत्र अपनी संपूर्ण विद्रूपत्ताओं और विसंगतियों में साक्षात् होता है। इस कहानी में कैलाशचन्द्र अच्छे शिक्षक हैं जो विद्यार्थियों को पढ़ते हैं लेकिन अन्य शिक्षक पढ़ाते नहीं हैं। कैलाशचन्द्र इसी विषय में सोच रहा है कि "शिक्षक ऐसा क्यों करते हैं,तो मुख्य रूप से उन्हें दो बातें नजर आती

[16] मिथिलेश्वर, मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियां,(भाग-३), इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण,2015,पृ.142

[17] पुष्पपाल सिंह, समकालीन कहानी नया परिप्रेक्ष्य, सामयिक बुक्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण:2011,पृ.301।

हैं! पहली बात यह कि पैरवी और पैसे के आधार पर कुछ लोग शिक्षक नियुक्त होकर कॉलेजों में आ जाते हैं, जो पढ़ा सकने में बिलकुल असमर्थ होते हैं, इसीलिए किसी तरह समय बिता देना उनकी नियति होती है। इसके अतिरिक्त दूसरी बात यह कि नौकरी स्थायी हो जाने के बाद अधिकांश शिक्षक यह सोचते हैं कि मन से पढ़ाएँ या न पढ़ाएँ, वेतन तो उन्हें मिलना ही है, नौकरी बरकरार रहनी ही है, फिर वे मेहनत क्यों करें? वैसे लोग अपनी मेहनत राजनीति करने या किसी व्यवसाय में लगाते हैं। कॉलेज में तो अपनी नौकरी जीवित रखने के लिए आकर सिर्फ चेहरा दिखा जाते हैं।"[18]इस कहानी में अध्यापक की बेईमानी पर तीव्र कटाक्ष हैं। इसी प्रकार अध्यापकों के भ्रष्ट आचरण को मिथिलेश्वर जी ने कहानी में चित्रित किया गया है।

2.3 भ्रष्ट व्यवस्था के प्रति तीव्र आक्रोश

"आधुनिक कहानीकार ने समाज के प्रत्येक क्षेत्र में फैले व्यवस्थागत भ्रष्टाचार का यथार्थ चित्रण भर ही नहीं किया है अपितु उसके प्रति अपनी तीव्र लेखकीय प्रतिक्रिया रोष और आक्रोश के रूप में व्यक्त की है। कहानियों में ऐसे पात्र और स्थितियों की सर्जना की गई, जो लेखकीय विचारधारा को वहन कर इस भ्रष्टाचार के प्रति खुलकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।"[19] 'अनुभवहीन'कहानी में रमेन्द्र अपने दोस्त से कहता है कि "तो तुम सब-डिप्टी कलेक्टर का फॉर्म भर रहे हो?" "हाँ।" "वानी तुम्हारी एज एक्सपायर कर चुकी है और अब इसमें लक आजमा रहे हो!" "यही समझो।" "समझें क्या, तुम्हारा कपार!" रमेन्द्र फॉर्म उसके कन्धे पर पटकते हुए बोला, "मुझे दुख है कि फॉर्म भरते-भरते एज एक्सपायर हो जाने के बाद भी तुम्हें

---

[18] मिथिलेश्वर, मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियां,(भाग-3), इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण:2015,पृ.77,78।

[19] पुष्पपाल सिंह, समकालीन कहानी नया परिप्रेक्ष्य, सामयिक बुक्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण:2011,पृ.302।

अनुभव नहीं हुआ। तुम क्या समझते हो कि इस बार तुम्हारा हो जाएगा? अरे बच्चू, जितनी सीटें खाली हैं, उतनी नियुक्तियाँ हो चुकी हैं। अब यह सिर्फ गोरखधन्धा चल रहा है।"[20] कहानी में रमेन्द्र बिहार पब्लिक सर्विस कमीशन के भ्रष्टाचार को देखकर रोष प्रकट करता हैं।

2.4 अकाल,सूखा और बाढ़ की मार

"जीवन की आर्थिक विपन्नता का एक पक्ष यह है कि आए दिन देश अकाल, सुखा और बाढ़ की मार से त्रस्त रहता है। इन स्थितियों का सर्वाधिक प्रभाव ग्रामीण समाज पर पड़ता है। गांवों में फैली गरीबी और भुखमरी अकाल-सूखा और बाढ़ की स्थितियों में अपने पैशाचिक रूप में सामने आती है। मिथिलेश्वर की कहानी 'मेघना का निर्णय' इस कहानी में किसान, किसान न होकर शहर में मजदूर बन गए हैं। गांव में बाढ़ आने की वजह से खेत की फसलें खराब हो गई। बनिहार चरवाह को बाबूओं के घर काम मिलना मुश्किल हो जाता है। क्योंकि गांव में बाबूओं की संख्या अधिक थी, इसलिए बाहर के बेघर-बार हुए मजदूर कम मजदूरी में ही गांव में बाबूओं के यहां बनिहार, चरवाह बन गये,तभी से मेघना(पात्र) के गांव में मजदूर शहर जाने लगे। "आज की अनेक समस्याएं चाहे वे ग्रामीण क्षेत्र से जुड़ी हो या शहरी और असामंजस्यपूर्ण आंशिक वितरण का ही परिणाम है। यह असामंजस्यपूर्ण आर्थिक वितरण का ही परिणाम है कि आज की व्यवस्था के अंतर्गत श्रम करने वाला वर्ग तो अभावग्रस्त है और यम करने वाला वर्ग साधन सम्पन्न है।"[21]

---

[20] मिथिलेश्वर, मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियां,(भाग-१), सामयिक बुक्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण:2011,पृ.22।
[21] डॉ.हीरालाल शर्मा, डॉ.महेन्द्र, सामाजिक परिवर्तन में कथा साहित्य की भूमिका, अनंग प्रकाशन, दिल्ली,2003|

'बीजारोपण'कहानी में इसी समस्या को दर्शाया है। धरीछन के भाग्य की विडम्बना थी कि पत्नी के गर्भकाल में उसके इलाके की फसलें सूखे की चपेट में आ गयी। फिर पूरे इलाके में अकाल की छाया सर्वत्र मंडराने लगी। उसे काम मिलना बन्द हो गया। गांव के बाबू लोग तो सूखे से परेशान जरूर हुए,लेकिन उसकी तरह संकट में नहीं पड़े। दो-दो तीन-तीन साल तक खाने के अनाज उनके घर में थे। उनके यहां जो बनिहार चरवाह थे,उन्हें भी कर्ज के रूप में अनाज मिल गया,लेकिन धरीछन की तरह जो स्वतन्त्र मजदूर थे,उनका गांव में रहना मुश्किल हो गया। "आज गांव में भाई-भाई के बीच जो समस्याएं आर्थिक मसलों को लेकर आ खड़ी हैं और परिवार किस प्रकार आपसी फूट के शिकार हो रहे हैं,किस प्रकार गांव की जनता थाने,कचहरी और विभिन्न प्रकार की गुटबंदियों में पड़ी हुई है,इसका सशक्त चित्रण 'दूसरा महाभारत'कहानी संग्रह की कहानियों में मिथिलेश्वर ने किया है। प्रस्तुत: उनकी कहानियां गांव में परिवर्तित परिवेश और जीवन पद्धति से गहरी पहचान स्थापित करती है।"[22]

2.5 शिक्षित बेरोजगारी

"शिक्षित बेरोजगारी भी समकालीन जीवन का एक प्रकार से अर्थाभाव का ही एक शाप है। आधुनिक कहानी ने इस समस्या को बड़े विस्तार से और उसके सूक्ष्मतम संदर्भों में चित्रित किया है, इसलिए इसका पृथक विवेचन ही उचित है। वर्तमान जीवन की बहुत बड़ी विसंगति देश में फैली शिक्षित बेरोजगारी है। बेरोजगारी का एक पक्ष यह भी है कि उचित व्यक्ति को समुचित रोजगार नहीं मिलता है। किसी पद के लिए प्रत्याशी की योग्यता, शिक्षा और प्रतिभा

[22] पुष्पपाल सिंह, समकालीन कहानी नया परिप्रेक्ष्य, सामयिक बुक्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण:2011,पृ170।

को न देखकर सिफारिश की शक्ति को देखा जाता है। कदाचित् इससे पहले हत्ल देश में बोग्यता, शिक्षा और प्रतिभा की ऐसी दारुण अवमानना कभी नहीं हुई थी। अवत्तर की समानता का भूलाधिकार संविधान की पोथियों में कैद होकर रह गया है। इन स्थितियों ने युवा मन में एक गहरी निराशा और आक्रोश को जन्म दिया। आधुनिक कहानी में जीवन का यह पक्ष अपने विभिन्न आयामों में चित्रित हुआ है।"[23]मिथिलेश्वर की कहानी 'अनुभवहीन' कहानी में अनुभवहीन कहानी के नायक से उसका मित्र उसे कहता है "मुझे दुख है कि फॉर्म भरते-भरते एज एक्सपायर हो जाने के बाद भी तुम्हें अनुभव नहीं हुआ। तुम क्या समझते हो कि इस बार तुम्हारा हो जाएगा? अरे बच्चू, जितनी सीटें खाली है, उतनी नियुक्तियाँ हो चुकी हैं। अब यह सिर्फ गोरखधन्धा चल रहा है।" अनुभवहीन कहानी का नायक अच्छा पढ़ा लिखा होने के बावजूद भी उसे नौकरी नहीं मिली है। नौकरी पाने के लिए क्या क्या प्रयत्न नहीं करता है। उसका दोस्त उसे कहता है तुम्हारी एज एक्सपायर कर चुकी हैं और अब इसमें लक आजमा रहे हो !" अब वह बूढ़ा हो चुका है सरकारी नौकरी ढूंढ़ते ढूंढ़ते फिर भी हार नहीं मान रहा है। योग्यता के आधार पर नौकरी न मिलकर सिफारिश के आधार पर सरकारी नौकरियां मिलती है।

'विग्रह बाबू' कहानी भी गरीबी में जीनेवाले एक मध्यमवर्गीय क्लर्क की जीवन कथा है। वह शहर में दफ्तर व्दारा मिले हुए कमरे में रहता है। मिथिलेश्वर जी उसकी आर्थिक दयनीय स्थिति का चित्रण करते हैं। विग्रह बाबू की स्थितियां चरम दयनीय, संदर्भ दारूण और असंगतिया भयावह हैं। विग्रह बाबू की खौफनाक और विकराल दुनिया ने मुझे पूरी तरह दहला दिया था। उनके साथ तीन चार महिना बीतते बीतते ही मुझे लगा था कि अगर देर तक सोचता

---

[23] पुष्पपाल सिंह, समकालीन कहानी नया परिप्रेक्ष्य, सामयिक बुक्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण:2011.पृ.160,161।

रहूँगा तो पागल हो जाऊँगा । विग्रह बाबू का पुरिवार काफी बड़ा है। दो भाई और बहन अपंग है। तीन लड़के और दो लड़कियां। साथ में बूढी माँ भी है। उनका गांव में मकान तो हैं लेकिन उसकी हालत उसमें रहने जैसी नहीं है। इस बारे में बाबू कहते हैं गाँव में पुश्तैनी मकान के सिवाय जमीन का एक भेटा दुकडा भी उनके पास नहीं है। उनके अनुसार उनका परिवार बहुत बड़ा है। परिवार के तीन सदस्य अपाहिज हैं। दो भाई तथा एक बहन। विग्रह बाबू कहते थे कि ईश्वरीय प्रकोप के कारण उनके भाई और बहन हाथ पांव से लाचार हैं। इसीलिए उनका भरण पोषण भी विग्रह बाबू को ही करना पड़ता था। इसके साथ ही उनकी पत्नी,तीन छोटे छोटे लड़के, एक बूढी माँ तथा दो लड़कियां है। लडकियाँ लड़कों से उम्रदार हैं। बड़ी लड़की तो काफी सयानी हो गयी है। उनकी आर्थिक दरिद्रता के कारण वे चिंता में डूबे हुए थे। बेटी की जैसे तैसे शादी तय की तो लड़केवाले उनकी सच्चाई जानने को इच्छुक थे। शादी तय हो जाने के बाद लड़केवाले उनके जीवन स्तर की जानकारी लेने लगे थे। मुझे अपने मुहल्लेवालों पर बहुत गुस्सा आता है। उन्होंने लड़के वालों से विग्रहबाबू की बेढंगी और उजाड़ जिदगी को स्पष्ट कर दिया था। बस लड़के वालों ने चकबंदी आफिस जाकर बाबू को एक जबाब दे दिया था। स्पष्ट है कि शादी का सपना बिखर जाने से विग्रह बाबू पागलों की तरह घूमते रहे और अपना अंत कर लिया। इनके बारे में लेखक कहते हैं विग्रह बाबू के दर्द को किसी औरत के गर्भ की तरह कराह कराह कर मुझे ढोना ही है। आपसे मैं सिर्फ यही कहना चाहता हूँ कि हमको और आपको अब मिलकर यह देखना है कि कोई और विग्रह बाबू इस रास्ते से गुजरने न पाय। इस प्रकार मिथिलेश्वर जी अपनी कहानी में गरीबी का चित्रण करते है।

'सरेआम'कहानी में मिथिलेश्वर यह कहते हैं कि इस देश की राजनीतिक स्थिति इस कदर बिगड़ चुकी है कि,देश में चारों ओर भय और आतंक का माहोल है। दोस्त की निर्दोष हत्या के बाद कहानी का निवेदन कहता है कि, "मुझे हर आदमी का चेहरा हत्यारों की तरह लग रहा है। लग रहा है जैसे दया,माया,मानवता और ममता नामक चीज़ धरती से उठ गई है। रुपए-पैसों का तोसवाल अलग हैं।"[24]अब हर बात बन्दूक की नोक पर की जाती है। चारों ओर चोरी, डकैती और लूटपाट है।

[24] मिथिलेश्वर, मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियां,(भाग-1), इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण:2015,पृ.174।

2.6 निष्कर्ष

राजनीतिक दांव पेंच, गुलामी सत्ता का लोभ, गरीबों पर हो रहे शोषण व अत्याचार, मजदूर वर्ग से ठगी व अनपढ़ जनता से लूटपाट आदि बातों को भी यथार्थ रूप में कहानियों में चित्रित किया गया हैं। ग्रामीण व शहरी परिवेश में अंतर व बदलते परिवेश को भी 'मिथिलेश्वर' जी ने अपनी कहानियों में चित्रित किया हैं। आधुनिक जीवन के विभिन्न आयामों से कहानी का चयन करना और उन्हें सुरुचिपूर्णढंग से पाठकों को समक्ष प्रस्तुत करने का कार्य भी कहानियों में सफल हुआ हैं। कहानियों की भाषा का कथ्य दिन- प्रतिदिन समय के साथ बदलते जा रहे हैं। विविध आयामों को लेकर लिखी गई कहानियां पाठक को मानस को झकझोर कर रख देते हैं और उन्हें सोचने के लिए मजबूर कर देते हैं। साथ ही जीवन के प्रति सार्थक व यथार्थ मार्ग दिखाने का प्रयत्न करते हैं।

आज़ादी के बाद राजनीति गांवो में पहुंच गई हैं। राजनीति के कारण सामाजिक जीवन में परिवर्तन आ गया हैं। इस परिवर्तन ने सामाजिक ढाँचे को हिला दिया हैं। मिथिलेश्वर जी ने भ्रष्ट राजनीति का चित्रण कर उसमें परिवर्तन की आवश्यकता पर बल दिया हैं। आधुनिक युग में गांवो में शिक्षा की सुविधाएं मिलने लगी हैं। लोग उदासीनता को छोड़कर बच्चों को स्कूल भेज रहे हैं। युवक पढ़- लिखकर नौकरी करने लगे हैं, तो कुछ पढ़- लिखकर भी नौकरी न लगने से खेती में काम कर रहे हैं। खेती के साथ छोटे- छोटे उद्योग भी कर रहे हैं।

तृतीय अध्याय

मिथिलेश्वर की कहानियों में चित्रित किसानों की समस्याएं

मिथिलेश्वर की कहानियों में चित्रित किसानों की समस्याएं

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहां पर लगभग 70 प्रतिशत लोगों गांवों में रहते हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार यहां के गांव तथा खेती-बाड़ी है। महात्मा गांधी ने कहा था कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है।"डॉ. भरत सगरे ग्रामीण समुदाय के बारे में कहते हैं भारतीय समाज ग्रामों में बसा हुआ है। भारतीय ग्राम आज भी परंपरागत पद्धति से जीवन यापन कर रहा है। जीवन का आधार खेती, मजदूरी या कुटीर उद्योग ही हैं।"[25]

19वीं शताब्दी से गाँवों में विभिन्न वर्ग के लोग, जैसे भूमिहीन मजदूर और किसान से शुरू करके जमींदार और लगान देनेवाले भूस्वामियों तक किस प्रकार उत्पन्न हुए, कैसे उनके आपसी संबंध बने, आज भी इस बारे में इतना मत-वैभिन्य है। उदाहरण के लिए खेत-मजदूर वर्ग को लीजिए। सुरेंद्र पटेल और उनके पहले रजनी पामदत्त इत्यादि लेखकों ने इस वर्ग का जन्म औपनिवेशिकता के फलस्वरूप माना है। दूसरी ओर धर्म कुमार इत्यादि के मतानुसार उपनिवेशीकरण के साथ इसका कोई संबंध नहीं है, क्योंकि उपनिवेश-पूर्व काल से यह वर्ग अस्तित्व में था और इसकी संख्या उपनिवेश काल में बढ़ी नहीं।"[26] 'रात' कहानी में जमींदार जोगेन्दर सिंह ने धरूपा बाबू के मरते ही बाबू के एवज में धुरुपा को चरवाहा रख लिया है। बाबू पर बहुत सारे पैसे हैं उनके। घर में कुछ है नहीं कि चुकता किया जा सके। इसी से वे अब इस रूप में ही चुकता करवा रहे हैं। इस तरह कर्ज चुकाते चुकाते खेतिहर मजदूर कि पीढ़ी दर पीढ़ी गुजर जाती है।

---

[25] डॉ.भरत सिगरे, हिन्दी आंचलिक उपन्यासों में दलित जीवन,पृ106

[26] सब्यसाची भट्टाचार्य, आधुनिक भारत का आर्थिक इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पटना,

डॉ.वर्षा मिश्र बनिहार और चरवाह के संदर्भ में लिखती हैं कि "बिहार के गाँवों में सबसे लाचार और विपन्न बनिहार और चरवाह होता है। इस पर सम्पन्न किसानों द्वारा किए जाने वाले अत्याचारों का मिथिलेश्वर ने अपनी कहानियों में बहुत व्यापक पैमाने पर चित्रण किया है। इसलिए "बनिहार" और "चरवाह" की आर्थिक स्थिति पर सर्वप्रथम दृष्टिपात जरूरी है। बनिहार और चरचाह मजदूरों से अलग होते हैं। मजदूर स्वतंत्र होता है और रोज के हिसाब से मजदूरी पाता है। लेकिन बनिहार, चरवाह एक वर्ष के लिए अनुबन्धित होते हैं। एक वर्ष के बाद मालिक का हिसाब-किताब चुकता करने के बाद वे अपना मालिक और धंधा परिवर्तित कर सकते हैं। जिस दिन से कोई गरीब किसी सम्पन्न किसान के यहाँ बनिहार बनता है, उस दिन से उस किसान की खेतीबारी की सारी जिम्मेवारी वह बनिहार अपने ऊपर ले लेता है। बनिहार के कार्य निम्नलिखित हैं- खेत जोतना, फसल उगाना, पटवन करना, फिर फसल खलिहान में ले आना, फसल से अनाज अलग करना और अनाज मालिक के घर पहुँचाना। इन कार्यों को अंजाम देने के लिए उसे ठंडी, गर्मी और बरसात की उग्र एवं रुद्र विभीषिकाओं को कठोर बनकर सहन करना पड़ता है। इसलिए बनिहार को 'पत्थर जिस्म इनसान कहा जाता है। इस कठिन परिश्रम के बदले में उन्हें मालिक से क्या प्राप्त होता है ? मालिक अपने खेत में से सवा बीघा खेत की फसल उसे दे देता है और उसे खाने के लिए प्रतिदिन डेढ़ सेर धान के हिसाब से अन्न खुराक के रूप में देते हैं।

चरवाह की नियुक्ति-माल-मवेशियों के लिए होती है। प्रारम्भ में ही वर्ष भर का पारिश्रमिक तय कर लिया जाता है। इसके बाद घर के सभी पशुओं की जिम्मेवारी चरवाह पर

आ जाती है। यह गाय, बैल, भैंस आदि पशुओं को खिलाने पिलाने, धोने, दुहने, चराने, उनके गोबर से उपले या कंडे आदि बनाने आदि कार्य करता है। इन कार्यों से जो थोड़ा बहुत समय उसके बाद बचता है, उस पर भी उसका अधिकार नहीं। बचा हुआ समय उसे मालिक के घर के अन्य कामों पर खर्च करना पड़ता है। इस प्रकार चरवाह खरीदे हुए गुलाम के समान हैं, जिसके लिए "आका" (मालिक) की आज्ञा ही सर्वोपरि होनी चाहिए। शोषण का इतना बेजोड़ नमूना और कहां मिलेगा।"[27]

3.1 बंधुआ मजदूरों की समस्याएं

"सबसे नीचे के तल्ले में रहनेवालों के बीच बंधुआ मजदूरों की अवस्था सबसे करुण थी। बंधुआ मजदूर का अर्थ है पैसे उधार लेकर उसे चुका न पाने के फलस्वरूप श्रम के द्वारा उसे चुकाने की कोशिश अथवा पैसे उधार लेने के लिए किसी संपत्ति को बंधक रखने के बदले खुद को बंधक रखना। यह एक प्रकार से अपनी दासता के दस्तावेज पर हस्ताक्षर करना था। 18वीं शताब्दी का एक बंगला शब्द इनके बारे में बहुत उपयुक्त लगता है। वह है खतबंदी 'अमिक' (बंधुआ मजदूर)। बिहार और उत्तर प्रदेश के पूर्वांचन में कामिया, तमिलनाडू, पान्नीयाल, गुजरात में हाली इत्यादि समूहों के अनेक लोग इसी स्थिति में जा पड़े थे।"[28] इस तरह कि स्थिति मिथिलेश्वर जी कि कहानी, 'भोर होने से पहले' कहानी में दिखाई देती है। बैजू भी एक बंधुआ मजदूर की तरह अपना जीवन व्यतीत करता है। बैजू का बाप रविकान्तजी के यहां बनिहार थे। वह बनिहार होते हुए भी बैजू को गांव के स्कूल में पढ़ाते थे। वह चाहते थे कि

[27] डॉ.वर्षा मिश्र, मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण यथार्थ, रामबाग, कानपुर,2004,पृ.87।

[28] सब्यसाची भट्टाचार्य, आधुनिक भारत का आर्थिक इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

उनका बेटा उनकी तरह बनिहार न बनकर पढ़ लिखकर नौकरी करें। अचानक दुबली होती जा रही उसकी मां को आरा के बंगाली डॉक्टर ने टी.बी का मरीज बता दिया। बैजू के बाप की परेशानी बढ़ गयी। जमींदार से कर्ज ले-लेकर उन्होंने अपनी पत्नी का इलाज शुरू कर दिया। इस बीच असमय में ही बैजू की पढ़ाई छूट गयी। बैजू के बाप कर्ज से लद गए। लेकिन अपनी पत्नी को बचा नहीं सके। कर्ज का बोझ और बैजू के भविष्य की चिन्ता ने उन्हें जल्द ही कमजोर बना दिया और वह भी अपनी पत्नी के पास चले गये। माँ-बाप की मृत्यु के बाद बैजू एकदम अनाथ और बेसहारा हो गया। तब रविकान्तजी के परिवार ने उसे बहुत ढाढ़स बंधाया तथा अपने यहाँ ही उसे रख लिया। दरअसल, उसके पिता ने जो कर्ज लिए था उसे चुकाने का अब यही रास्ता था।

3.2 खेतिहर मजदूरों की समस्याएं

ग्रामीण जीवन की संरचना में जिस प्रकार दलित और खेतिहर मजदूर रह रहे हैं तथा गांव में उनकी जो सामाजिक हैसियत और स्थित है वह ऐसी नहीं है कि बिना किसी शोषण अथवा दबाव के अपनी जिंदगी व्यतीत कर सके। जीवन के हर मोड़ पर इन्हें प्रभु-वर्ग की नीतियों और अहंकार से टकराना पड़ता है। जब तक ये प्रभु-वर्ग की हां-में-हां मिलाते हैं तब तक इन्हें उनसे अभयदान मिलते रहते हैं जब एक ये भू-संपत्तियों की जी-हुजूरी और सिर झुकाकर सम्मान करते हैं, तब तक वह इन्हें थोड़ी सी सुविधा दिये रहता है, लेकिन जिस दिन से उनसे सिर उठाकर बातें करने लगते हैं अपका अवज्ञा कर देते हैं या अपने वाजिब की मांग करते हैं-वह दिन उनके लिए एक अभिशाप की तरह होता है। कहीं से उनकी जिंदगी बयारने लगती है। प्रभु वर्ग इन्हें हर

तरह से तोड़ने की कोशिश करता हैं जीवन हर मोड़ पर बार-बार अपमानित करते हैं तथा जरूरत पाने पर दण्ड भी देते हैं। यहां तक की जान से मार देते हैं और वे चाहकर भी कुछ कर नहीं पाते हैं। इनका वर्गीय चरित्र भी इन्हें इस बात की इजाजत नहीं देता है कि ये खुलकर अकेले अपनी आवाज उठा सके। लेकिन जिस दिन वह एक होते हैं, इसकी मांगे एक होती है- वह दिन उनके जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है, जहां से वे सीधे मुख्यधारा के जीवन से टकराते हैं और अपनी हाशिए की जिंदगी से मुक्त होने की कोशिश करते हैं"।[29]

मिथिलेश्वर की कहानी 'मेघना का निर्णय' इसी सत्य को हमारे सामने रखती है।'मेघना का निर्णय' शीर्षक कहानी श्रमिक एकता की कहानी है। मेघना शोषक वर्ग से टकराने का साहस दिखाकर अपने लोगों का नेतृत्व प्राप्त करता है। मेघना और उसका साथी जगुआ रेल बाबू के बंगले के अन्दर साग-सब्जी और फूल-पत्ती लगाने लायक काफी प्रति जमीन थी। चूंकि मौसम फूल-पत्ती और साग-सब्जियों की बोआई का चल रहा था, इसलिए उस बंगले में उन्हें काम मिल गया। वह दोनों तीन दिन पूरी मेहनत से अपना काम करते हैं और काम पूरा हो जाने के बाद रेल बाबू से अपनी तीन दिनों कि मजदूरी लेने जाते हैं। रेल बाबू ने बीस रुपये उनके सामने बढ़ाए । मेघना ने रुपये गिनकर उन्हें वापस कर दिए। और कहा, ये तो कम है।" तब रेल बाबू कहता है" कम नहीं है।" तब रेल बाबू उनसे कहता हैं "दूसरे मजदूर पन्द्रह रुपये में ही इस पूरी जमीन की बोआई का ठीका माँग रहे थे, लेकिन मैंने नहीं दिया। तुम लोगों को अधिक दे रहा हूँ।" "लेकिन आपने तो पाँच रुपये रोज के हिसाब से हमें तय किया था।"तय करने से क्या हुआ? जितना काम करोगे, उतना ही न पैसा लोगे।"हम लोगों ने तीस रुपये से अधिक का काम

---

[29] देवेन्द्र चौबे, समकालीन कहानी का समाजशास्त्र, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली,2011,पृ.183।

किया है। लेकिन आप ये बीस रुपये दे रहे हैं। "मुझे अन्धा न बनाओ। मैं रेलवे में रोज हजारों मजदूरों को खटा चुका हूँ। मुझे सब पता है, कितने का काम तुम लोगों ने किया है?" "लेकिन हम लोग पाँच रुपये से कम के हिसाब से नहीं लेंगे। शुरू में ही आपने हमें क्यों नहीं कह दिया था?" "तुम लोग इस तरह से बढ़-बढ़कर बात मत करो। तुम्हें पता है, किससे बात कर रहे हो?" रेल बाबू कुछ गरमाए। "साहब, आप कोई हों, हमें इससे क्या मतलब। हमने खून-पसीना एक कर काम किया है"।[30] इस तरह गांव का किसान, मजदूर सभी लोगों की चक्की में बूरी तरह पिसता हुआ दिखाई देता हैं। उनसे अधिकाधिक काम करवा लिया जाता है और उन्हें कम-से-कम मजदूरी दी जाती हैं। लगता है इस देश में मजदूरी जितनी सस्ती है, शायद दूसरी कोई चीज उतनी सस्ती नहीं हैं।

3.3 किसानों का शोषण

"शोषित वर्ग में किसान, काश्तकार, खेती मजदूर, देहाती पेशेवर, पहाड़ी कुली, घर के नौकर तथा निम्नजातियोंका समावेश है। यह वर्ग जमींदार, महाजन, ठाकूर ठेकेदार, साहूकार, पण्डित तथा सरकारी अधिकारियों से शोषित है। इनकी दयनीयता का प्रमुख कारण अर्थहीनता है, पर अशिक्षा अंध श्रद्धा-परम्पराप्रियता के कारण भी यह वर्ग पिछड़ा हुआ है। दिन रात अथक परिश्रम में जुटा रहने के बावजूद भी यह वर्ग भूखा ही रह जाता है। उच्च वर्ग की अमानवीयता का वह शिकार बन चुका है,। अर्थ, श्रम और सम्मान तीनों दृष्टि से यह शोषित है। इस वर्ग की आर्थिक लाचारी का लाभ उठाकर उच्च वर्ग अपना स्वार्थ और मनमानी की पूर्ति के लिए उसे

[30] मिथिलेश्वर, मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियां,(भाग-१), इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली,2015,पृ.348,349।

तंग करता है, उसे नोचता खसोटता है"।[31] 'बीजारोपण' कहानी में धरीछन दिनभर कुदाल से मिट्टी काटता और खाँची में उसे अपनी पत्नी के माथे पर उठा देता। पत्नी किनारे की मेंड़ पर ले जाकर फेंक देती। दिनभर की मजदूरी के बाद उन दोनों को सिर्फ पाँच रुपये मिलते। यह मजदूरी बहुत कम थी, लेकिन अकाल की वजह से कोई मजदूर विरोध नहीं करता। यह अजीब अकाल था। इसका प्रकोप सिर्फ उसके इलाके में ही था। उस पर भी इस अकाल से पीड़ित सिर्फ फुटकर मजदूर ही थे। बाबू लोग और बन्धुआ मजदूर उतने त्रस्त नहीं बाजार में अकाल की वजह से ही महँगाई चरम पर थी। धरीछन और उसकी पत्नी मजदूरी से पेटभर खा भी नहीं पा रहे थे। कहाँ वह अपनी गर्भवती पत्नी को आराम और सुविधा देना चाहता था, उलटे अब उससे मजदूरी करवानी पड़ रही थी।

3.4 किसानों की आर्थिक स्थिति

कर्ज हमेशा ही किसान, खेतिहर मजदूर का शत्रु सिद्ध हुआ है। वह उनका जीवन हर तरह से बर्बाद कर देता है। कर्जदार न केवल ब्याज ज वसूलता है, स्वाभिमान भी चूस लेता है। 'रात' कहानी में जमींदार जोगिन्दर सिंह से धुरुपा बाबू ने कर्ज लिया था। बाबू की मृत्यु हो जाती है। घर में कुछ नहीं कि कर्ज चुकता किया जा सके। इसीलिए जोगिन्दर सिंह ने बाबू के मरते ही बाबू के एवज में धुरुपा को चरवाहा रख लिया हैं। आर्थिक दृष्टि से विपन्न गांव के लोगों की स्थिति का चित्रण मिथिलेश्वर की में मिलता है। 'एक और हत्या 'कहानी में जगेसर हरपाल सिंह का चरवाह है, भैंसों की देखभाल से बचें वक्त में बाजार से सामान खरीद कर ले आता है और

---

[31] डॉ. कृष्णा पाटील, हिन्दी की ग्रामीण कहानियों में समाज, विद्या प्रकाशन, प्रथम संस्करण:2011,पृ156।

ईमानदारी से काम करने के बदले में बहुत गालियां खाता है-“लाट साहब बने हैं साले। बाजार में जाकर मजा मार रहे हैं। महीना खत्म होते ही अपनी मेहरिया को ले जाकर पच्चीस रुपये दे आते हैं,और भैंस हम खिलाएँ। एक दिन की रहती तो एक दिन की.... साले ने रोज का नियम बना लिया है। जब कहीं किसी काम को भेजता हूँ, चूतिया वहीं जमा रह जाता है। खाना साले को बढ़िया चाहिए। धोती आठ से कम की लेंगे नहीं। घंटेभर से साले की राह देख रहा हूँ... दस डेग पर बाजार है। दिनभर में आदमी सैकड़ों बार आ-जा सकता है, मगर यह कमीना है कि इसका कोई जवाब ही नहीं। दरवाजे पर भैंस टर्रा रही है”।[32] जगेसर को आजीविका का कोई अन्य साधन न होने की वजह से उसे अपमान सहना पड़ता है। उसे इस यातना ने निराशावादी बना दिया है।

3.5 आजादी के बाद किसानों की स्थिति

आजादी के बाद संचार साधनों की सुविधाओं के कारण गाँवों में यातायात बढा़ और शहरी सभ्यता का प्रभाव ग्रहण कर गाँवों में नवपरिवर्तित स्थितियां उभरने लगी। आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण संस्कृतियों की टकराहट होते हुए भी गांवों में धीरे धीरे नयापन समाता गया। विकास योजनाएँ, रेड़ियों, समाचार पत्रों, यातायात के साधन आदि भी ग्रामपरिवर्तन के लिए उत्तरदायी है। प्रथमतः न्यूतनतम विकास साधानों के प्रति ग्रामीणों में कुतूहल और आकर्षण दिखाई देता है। नये युग की नयी देन को सगौरव स्वीकारा जाता है। ‘बन्द रास्तों के बीच’कहानी में आजादी के बाद गावों में किस तरह परिवर्तन हुआ और उसका

[32] मिथिलेश्वर, मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियां (भाग-१), इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण:2015पृ.36।

परिणाम किसान, खेतिहर मजदूर, चरवाहों पर हुआ इसका चित्रण है। जगेसर बनिहारी करता है और उसका बेटा बटेसर चरवाही करता है। जब से यह खबर गांव में आई है कि जगेसर के गांव से होकर गुजरने वाली कच्ची सड़क पक्की सड़क में तब्दील होने जा रही है, तब से जगेसर खुश है। कच्ची सड़क के किनारे जगेसर की पुश्तैनी मड़ई है, जिसे वह दूकान में तब्दील करने के सपने देखता है। इस दुकान के बल पर वह दुखी जीवन से मुक्ति के के सपने सपने दे देखता है। जगेसर को कस्बे के गुरुचरण की याद आ जाती है। गुरुचरण ने मजदूरी से प्रारम्भ कर चाय-पान की गुमटी शुरू की थी और धीरे-धीरे कस्बे में हजारों रुपये की इमारत खड़ी कर दी। सड़क बननी तो शुरू हो जाती है लेकिन उद्घाटन के पहले उसकी दुकान को हटा दिया जाता है और उसका सुखद भविष्य का सपना टूट जाता है।

भारत के ग्रामीण गरीब किसान खेतिहर मजदूर, बनिहार, चरवाह को उम्मीद थी कि आजादी के साथ उनका जीवन सुख से परिपूर्ण हो जाएगा लेकिन शीघ्र ही उसे मोहभंग की दुखद अनुभूति से आँखें चार करना पड़ा। कहानी में निझावन गरीब किसान के साथ ही साथ गरीब भारत का भी प्रतीक है, जिसकी छः सन्तानें आजादी आने के बावजूद सुखी नहीं हैं। निझावन के रूप में जैसे गरीब किसान ही प्रश्न कर रहा है "कैसी आजादी के सपने संजोये थे? क्या वह सब कुछ मात्र दिखावा, भ्रम और छलावा ही था? क्या उतनी बड़ी आजादी सिर्फ चन्द लोगों को कुर्सी से चिपकाने भर तक ही थी? कुछ भी समझ नहीं आता है निझावन को।"[33] निराश होकर निझावन भाग्यवादी बन गया है। स्वतंत्रता के पहले भी वह भाग्यवादी था फिर उसकी स्थिति में स्वतंत्रता के बाद बुनियादी परिवर्तन नहीं हुआ।

---

[33] मिथिलेश्वर, मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियां, (भाग-१), इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, प्रथम संस्करण:2015,पृ.216।

मिथिलेश्वर की कहानी ‘मेघना का निर्णय’ खेतिहर मजदूरों दुख की मार्मिक स्थिति को उभारती है,जो खेती कर काम बंद होने के बाद, शहर में मजदूरी करने चले जाते हैं तथा वहां पर मजदूरी को लेकर हुए झगड़े में गांव के भू पत्तियों द्वारा शहर के मालिक के सामने अपमानित होते हैं “क्यों रे मेघना, तू सब गांव की इज्जत पर ही पड़ गया है? इन साहब के तेरे पर तुम सब क्यों गाली-गलीज करने गये थे ?’ रगुन राय बोले। ‘हम अपनी मजदूरी मांगने गये थे। मेघना ने कहा। इसके पहले कि रगुनराय बोले, जोरावर सिंह ब बीच में कूद पड़े, “साले ईमानदार बनते हो? साहेब को झूठा बना रहे हो? शहर जाकर बड़े आदमियों के साथ बदमाशी करते हो?” “इस तरह डांटने से काम नहीं चलेगा लेगा सिंह जोरावर सिंह से आगे बहते हुए गरजे- ‘मंगा लो रस्सी और सालों को बांधकर यहीं धूप में पार दो”।...[34] “यहां कहानीकार ने दिखलाया है कि रेल बाबू के कहने पर किस प्रकार भू-पति मेघना और उसके साथियों को डांटते-फटकारते है, जबकि उनकी गलती मात्र इतनी है कि वे रेल बाबू से अपनी वाजिब मजदूरी की मांग करते हैं। उसके डांटने का लहजा भी इतना अपमानजनक है कि उसे देखकर यही लगता है कि ग्रामीण जीवन की संरचना में इन खेतिहर मजदूरों की स्थिति, खेतिहर सबसे अधिक खराब है तथा उनके जीवन के सारे महत्वपूर्ण निर्णय दूसरे लोग लेते हैं। वे निर्णय, इनके लिए इतने अधिक अपमानजनक होते हैं कि उसके बाद इनके सामने केवल एक ही रास्ता बचता है ना तो गुलामों की तरह जीवन व्यतीत करें अथवा अपनी वर्तमान स्थिति और व्यवस्था से विद्रोह।”[35]उच्च वर्ग के लोगों निम्न वर्ग के लोगों का शोषण करते हैं। यह इस कहानी में चित्रित किया गया है।

---

[34]मिथिलेश्वर, मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियां,(भाग-१), इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण:2015,पृ.351।

[35] देवेन्द्र चौबे, समकालीन कहानी का समाजशास्त्र, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली,2011,पृ.174।

3.6 निष्कर्ष

ग्रामीण किसान खेती पर अपना और अपने परिवार का पालन पोषण नहीं कर पता है। इसीलिए वहां आत्महत्या कर रहा है। मजदूरी करने वाली मजदूरों का शोषण नगर तथा ग्राम दोनों स्थानों पर होता है। क्योंकि मजदूरों को हमेशा दबाया और कुचल जाता है।खेतिहर मजदूर , बनिहार चरवाह आदि समाज के निम्न स्तरीय जीवन जीनेवालों की आर्थिक विवशताओं एवं जीवन में व्याप्त निराश का चित्रण भी अत्यंत सशक्त रूप में मिथिलेश्वर जी ने अपनी कहानियों में किया हैं। मिथिलेश्वर की कहानियों में अकाल, सुखा और बाढ़ की स्थितियों के रूपों को अभिव्यक्त किया हैं। कहानियों में अकाल, सुखा तथा बाढ़ प्रदत्त मानवीय पीड़ा, भूख, गरीबी और अन्य प्रकार की यंत्रणाओं का जीवन आलेखन हुआ हैं। खेतिहर मजदूरों के घरों की दीवारें मिट्टी तथा छत खपड़ैल का हैं।

चतुर्थ अध्याय

मिथिलेश्वर की कहानियों में स्त्री समस्याएँ

मिथिलेश्वर की कहानियों में स्त्री समस्याएँ

"आधुनिक युग के साहित्य में विमर्श शब्द काफी प्रचलित हुआ है। इस विमर्श शब्द का अर्थ जानना आवश्यक है। विमर्श का अर्थ है, विचार या निवेदन, आलोचना जांच परामर्श या परीक्षा। अंग्रेजी में इसे Delication Consulation कहा जाता है जिसका अर्थ है, विवेचन, परामर्श या विचार। स्त्री विमर्श का शाब्दिक अर्थ है-स्त्री विमर्श से जुड़े महत्त्वपूर्ण पहलुओं की चर्चा करना, विवेचन करना या परामर्श लेना। इस माध्यम से की जीवन के विविध पहलुओं पर चर्चा की जाती है। स्त्री का शोषण पीड़ा, दुःख, दर्द साहित्य के माध्यम से देश के सामने लाया जाता है। इसमें स्त्री की वर्तमान स्थिति का भी लेखाजोखा प्रस्तुत किया जाता है।"[36]

4.1 स्वतंत्रता के पूर्व स्त्री जीवन

"स्वतंत्रता के पूर्व स्त्री जीवन का इतिहास बताता है कि प्राचीनकाल में स्त्री को लक्ष्मी,सरस्वती के रूप में कल्याणकारी देवी माना जाता था। स्त्री के सिवा परिवार को निर्मिति नहीं हो सकती है अतः उसे पुरुष की अधांगिनी माना जाता है। इस तरह वैदिक काल में स्त्री की स्थिति उच्चतम थी। कालान्तर में पुरुष द्वारा स्त्री के कुछ अधिकार छीन लिए गये और स्त्री की उक्त प्रतिष्ठा में गिरावट निर्माण होती गयी। बाद में स्त्री को अनेक सांस्कृतिक बंधनों में कैद कर रखा गया।

उन्नीसंवी शती के प्रारम्भ में कई समाजसुधारकों द्वारा बाल विवाह, पर्दा-प्रथा, सतिप्रथा का विरोध किया गया, विधवा को पुनर्विवाह का हक्क प्राप्त करा दिया गया। सन् 1874 ई. के

[36] डॉ.सुकुमार भंडारे,हिन्दी कहानी आदि से आज तक,अमन प्रकाशन,रामबाग कानपुर,2015,पृ.115।

कानून द्वारा परिवार की अर्जित संपत्ति में स्त्री का अधिकार मान लिया गया। सन् 1917 ई. से उसे वोट देने का तथा चुनाव लड़ने का भी अधिकार प्राप्त हुआ है। इतनी वैधानिक सुविधाओं के होते हुए भी सांस्कृतिक बंधनों से स्त्री की मुक्ति नहीं हो सकी। कारण सांस्कृतिक बंधनों का पालन स्त्री के लिए आदर्श थे। अतः समाज मानस में उक्त वैधानिक सुविधाएँ स्वीकृत नहीं हो सकी तथा प्राप्त अधिकारों का वह लाभ नहीं ले सकी।

सामाजिक बंधनों से जकड़ी स्त्री के विविध रूपों विधवा, वेश्या, पत्नी, माता,प्रेमीका, विद्रोहिणी आदि को स्वातंत्र्यपूर्वकालीन कहानियों में चित्रित किया गया है। स्त्री के ये सभी रूप क्षत -विक्षत तथा दयनीयता से भरे-पूरे हैं। पूँजिवादी अर्थव्यवस्था के कारण जिस तरह निम्न वर्ग का सबसे ज्यादा शोषन दोहन होता था उसीप्रकार स्त्री का भी। इस भाँति स्वातंत्र्यपूर्व की स्त्री बेबस, लाचार तथा विवशता से पूर्ण और परवशता से भरी हुई दिखाई देती है। परिवार में पत्नी के साथ निम्न स्तर का बर्ताव किया जाता था। पत्नी का स्थान पुरुष के चरणों में ही माना जाता था। ननद, सास तथा पति की गलत धारणाओं को भी पत्नी द्वारा मजबूरन प्रतिष्ठा देनी पड़ती थी। परिवार के लिए यह सदा पिसती रहती थी पर सास, ननद के द्वारा प्रशंसा का पात्र नहीं बनती थी। श्रम के महत्व को समादर देते हुए जीवन की सच्चाई के साथ समझौता करते रहना उसके लिए अनिवार्य था, दरिद्रता की चक्की में दिसती हुई भी सतीत्व की परमसत्य मानकर जीवन संघर्ष में लीन रहती।”[37]

4.2 स्त्री स्वतंत्रता के बाद

[37] डॉ.कृष्णा,पाटील,हिन्दी की ग्रामीण कहानियों में समाज,विद्या प्रकाशन,2011,पृ.225।

"स्वातंत्र्योत्तर काल में स्त्री की सामाजिक अवस्था में कोई विशेष सुधार नहीं है। यहाँ भी वह सामाजिक, धार्मिक व पारिवारिक बंधनों का शिकार बनकर लाचार, अबला, कमजोर रूप में ही उभरकर आती है। जन्म से लेकर मृत्यु तक उसका जीवन यातनाओं से भर चुका है। उसके जन्म पर ही परिवार में निराशा छा जाती है। (मार्कण्डेय) अविवाहित अवस्था में उसे पिता की आज्ञा से और विवाहित होने पर पति की आज्ञा में रहना पड़ता है। उसी भाँति पिता माँ पति की आर्थिक दुर्व्यवस्था के अनुसार उसे अपने को डालना पड़ता है। प्रथा,पालन, धर्म का अत्यधिक बोझ स्त्री पर ही होता है। रूढ़ी परम्परा, जाति, धर्म की सामाजिक मान्यताओं के नाम पर उसका आर्थिक, शारीरिक व नैतिक शोषण होता है।"[38]

साहित्य में सदियों से सतायी जा रही स्त्री की विभिन्न समस्याओं को चित्रित किया गया है। मिथिलेश्वर जी ने ग्रामीण स्त्री की विभिन्न समस्याओं को बहुत करीब से देखा है। बचपन से ही कष्टमय जीवन व्यतीत करने वाले स्त्री ससुराल में दासी की तरह जीवन बिताती है। अपनी सभी इच्छाओं को दबाकर वह अपने परिवार के लिए त्याग करती है।

मिथिलेश्वर जी ने अपनी कहानियों में स्त्री पात्रों के माध्यम से उन्होंने समाज में स्त्री संघर्ष के विविध आयामों को प्रस्तुत किया है। ग्रामीण स्त्री शिक्षा से वंचित, जीवन भर अशिक्षा के कारण अनेक समस्याओं का सामना करती रहती है।

'सावित्री दीदी' कहानी की नायिका सावित्री दीदी, लम्बी,गोरी और खूब सुन्दर है, फिर भी सावित्री की शादी अच्छे नौकरी वाले लड़के से नहीं हो सकती, क्योंकि वे लड़के ग्रेजुएट या

---

[38] डॉ.कृष्णा,पाटील,हिन्दी की ग्रामीण कहानियों में समाज,विद्या प्रकाशन,2011,पृ.226।

मैट्रिक पास लड़की से शादी करना चाहते है, लेकिन सावित्री सिर्फ चिट्ठी-पत्री पढ़ने जितनी ही शिक्षित थी। अन्ततः दहेज की कमी और लड़की होने के कारण माँ के तानों से तंग आकर 'एल्ड्रिन' खाकर आत्महत्या कर लेती है।

मिथिलेश्वर के ग्रामीण जीवन के कहानियों में प्रायः सभी स्त्री पात्र अशिक्षित या अर्धशिक्षित है। इसलिए वे आत्मनिर्भर नहीं है। गाँव में व्याप्त रुढ़ि-परम्परा का शिकार है। ग्रामीण स्त्रियों का भविष्य आज भी अंधकारमय है। स्त्री की स्थिति सुधारने के लिए उचित शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए। जब तक समाज में व्याप्त बाल-विवाह और दहेज प्रथा जैसे कुप्रथा समाप्त नहीं होती हैं,तब तक ग्रामीण स्त्रियों का भविष्य अंधकारमय ही बना रहेगा। ग्रामीण समाज में लड़कियों को हीन भावना से देखा जाता है, देखने के इस नज़रिए को भी बदलना है। लड़के और लड़कियों में फ़र्क गाँवों में अधिक दिखाई देती है। गाँव की विधवा स्त्री अपना जीवन दुःखो और यातनाओं के बीच बिताने के लिए विवश है। उनका पुर्नविवाह करके समाज को अनेक बुराईयों से बचाया जा सकता है। गाँव में व्याप्त अंधश्रद्धा को समाप्त करना होगा। पंडित, पुजारी, ओझा के कर्मकाण्डों को भी लोगों के सामने उजागर करना होगा। तभी ग्रामीण स्त्री का सुन्दर और सुखमय भविष्य का उदय हो सकता है। गाँव की स्त्रियों को उनके भविष्य के लिए सतर्क, जागरुक और प्रेरित करना होगा। गाँव की स्त्री को स्वावलम्बी होना जरूरी है। तभी वे अपने भविष्य के बारे में सोच सकती हैं।

'संगीता बनर्जी' कहानी में एक आत्मनिर्भर स्त्री के बारे में बताया गया है। इस कहानी की संगीता बनर्जी समाज में व्याप्त अनेक बुराईयों और कुंठाओं को सहन करते हुए अपना

जीवन, अपने तरीके से व्यतीत करती है। प्रो०मल्होत्रा के जीवन में आने के बाद कुछ ही दिन वह हंसी-खुशी रह पाई थी तदनंतर प्रो.मल्होत्रा की मृत्यु हो जाती है। संगीता बनर्जी के सुंदर शरीर को देखकर हर व्यक्ति उसकी तरफ आकर्षित होता है। इस विपरीत परिस्थिति में भी अपने जीवन जीने का मार्ग ढूंढ लेती है. और स्त्रियों के उत्थान हेतु 'अबला निकेतन' नामक संस्था की नींव रखती है। स्त्री उत्थान का कार्य करनेवाली महिलाओं के जीवन का यथार्थ इस कहानी में चित्रित किया गया है और साथ ही पुरुष की स्त्री विरोधी दृष्टिकोणों की तीखी आलोचना भी की गई है। वे स्त्री को नहीं, उसके शरीर को देखते हैं।

हिन्दू समाज में विधवा समस्या का बड़ा ही भयंकर रूप दृष्टिगोचर होता है। डॉ. महेन्द्र भटनागर के अनुसार यों तो वर्तमान हिन्दू समाज में समग्र स्त्री जीवन, पुरुष वर्ग की तिरस्कार, दमन तथा उपेक्षा-भावना का शिकार हैं, लेकिन सबसे अधिक अत्याचार और शोषण की प्रतिपूर्ति एकमात्र विधवा है।विधवा स्त्री के जीवन का कोई मूल्य नहीं होता। समाज के झूठी मर्यादाएं उसे जीवन भर जलाती रहती है। उसे इन झुठी मान्यताओं की ही सीमाओं में बंधकर चलना होता है। विधवा समस्या के मूल में बाल विवाह तथा अनमेल विवाह जैसी कुप्रचाएं भी है। 'पहली घटना' कहानी में सामाजिक रूढ़ियो को दिखाया गया है। कहानी एक विधवा स्त्री की है, जो अठारह उच्चीस की उम्र में विधवा हो जाती है। वह हाईस्कूल तक पड़ी है, आत्मनिर्भर बनने के लिए आगे पढ़ना बाहती है। लेकिन परिवार वाले आगे की पढ़ाई नहीं कराना चाहते उसके घरवाले कहते हैं कि, "अठारह उन्नीस साल की जवान विधवा लड़की को कहाँ अकेले भेज दिया जाएगा। जवानी में बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। अगर कुछ हो गया तो फिर हम

कौन मुँह दिखाएंगे।"[39] विधवा स्त्री को अनेक अत्याचार झेलने पड़ते हैं। उन्हें रंगीन कपड़े पहनने पर पाबंदी है। उसे मांस-मछली खाने नहीं दिया जाता। कहीं बार बाहर अकेले नहीं जा सकती। किसी बाहरी आदमी से बात नहीं कर सकती। उसे विधवा जीवन के सभी परंपराओं को मानना पड़ता।

संततियुक्त स्त्री माता, जननी नाम से गौरवान्वित होती है। वही बड़भागन मानी जाती है और संततिहीन स्त्री की नापाक तथा अपशगुनी माना जाता है। मातृत्वहीन स्त्री को 'बाँझ' गाली से अभिहित होती है। धार्मिक तथा अन्य शुभकार्यों में उसको स्थान नहीं दिया जाता है। 'मातृत्य और दुग्धपान के योग्य स्त्री का स्त्रीत्व ही सार्थक माना जाता है। 'मातृत्व' और मातृत्वहीनता के सन्दर्भ में समाज की धारणाओं के अंतर को मिथिलेश्वर की कहानी 'तिरिया जनम' में स्पष्ट किया गया है। इस कहानी में सुनयना मुख्य पात्र हैं। सुनयना पढ़ने में अपने भाईयों से भी होशियार थी पर उसे उसके पिताजी ने प्राइमरी तक पढ़ाया और उसके भाई हाईस्कूल में जाने लगे। सुनयना का आगे पढ़ने का मन था लेकिन उसके पिताजी ने उसे आगे पढ़ने से मना किया। उसके पिताजी ने उसकी शादी कर दी। उसकी शादी हुए दस साल हो गए लेकिन सुनयना को संतान नहीं हुई थी। इसीलिए उसके घर के लोग उसके पति की दूसरी शादी करना चाहते हैं। सास और ननद भी उस पर बहुत अत्याचार करते हैं।

"विवाह के क्षेत्र में भारतीय समाज में वरपक्ष की श्रेष्ठता सदा ही रहती है। बेटीवालों का सिर हमेगा नीचा होता है। यह बात स्त्री के हीन सामाजिक स्थान की द्योतक है। सयानों ने जवाई

---

[39] .मिथिलेश्वर,मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियाँ,इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन,दिल्ली,प्रथम संस्करण:2015,पृ.108।

को दँसवा ग्रह' मानकर उसका मूल्य बढ़ाया है। जंवाई का मानसिक रोब वधू पक्ष पर हमेशा रहता है। ससुराल के सारे अत्याचारों को सहकर रहने में स्त्री का गृहिणी आदर्श है। 'गृहिणी रूप ही उसका जीवित साध्य है, इससे बढ़कर उसका जीवन ही नहीं। इससे मुक्ति पाने के लिए अगर वह मैके चली जाती है तो माँ-बाप की शान मिट्टी में मिल जाने की धारणा है। इस तरह अपने मैके की इज्जत बनाये रखने के लिए पीडित बहुएँ और बेटी का सौभाग्य सुरक्षित रखने के लिए उसके माता-पिता, भाई- बहन पति आदि ने किया जाने वाला अपमान सहकर खून का घूंट पीकर रहते हैं।"[40] यही स्थिति 'वैतरणी भौजी' कहानी में वैतरणी के विचारों में दिखाई देते हैं। वह कहती हैं, "मैं तो नरक भोग ही रही हूँ, उन्हें क्यों परेशान करूं? उनके मुँह पर कालिख क्यों पुतवाऊँ? इसीलिए तो इतनी दूर आ गयी हूँ-मर जाऊँगी तो मर जाऊँगी, उनकी जगहंसाई नहीं करवाऊँगी। उन्होंने तो अच्छी तरह देख सुनकर, तिलक-दहेज देकर शादी की थी-अब मेरी किस्मत ही ओखी है तो वे क्या करें?

'शरीर से लाश तक' यह कहानी एक गरीब बेबस लड़की की है। जिसके माँ-बाप बूढ़े हो गए हैं और भाई ट्रक दुर्घटना के कारण अपंग हो गया है। अपने परिवार की आजीविका के लिए गाँव में घूम-घूमकर जलेबियों बेचने के लिए मजबूर है। एक कुंवारी लड़की के यौन शोषण के लगातार प्रयत्न करने वाले समाज की सुविधा होगी। लोगों पर कहानीकार ने अच्छा और सहरा व्यंग्य किया है। जलेबियां बेचते हुए उसे पुरुष की लिजलिजी वासना का शिकार होना पड़ता है। पढ़े-लिखे नौजवान भी उसकी लाचारी का फायदा उठाना चाहते है। शिक्षित युवकों पर लेखक की टिप्पणी है उसे भैया की बात याद आ जाती है। सचमुच स्कूल और कॉलेज की पढ़ाई

---

[40] .डॉ.कृष्णा पाटील,हिन्दी की ग्रामीण कहानियों में समाज,विद्या प्रकाशन,2011,पृ.59।

एकदम बेकार है। पढ़ने-लिखने से समझ और ज्ञान नहीं होता है। मोटी-मोटी किताबें सिर्फ डिग्री के लिए पढ़ी जाती है।"[41] उसे लगता है कि विलासी युवकों की हवश की शिकार होकर अनेक स्त्रियों को जिंदा (शरीर को) लाश की तरह धोना पड़ता है।

'सावित्री दीदी' कहानी में सावित्री दीदी पात्र के माध्यम से ग्रामीण लड़कियों के जीवन का यथार्थ चित्रित किया गया है। सावित्री दीदी की मृत्यु कर तीसरा दिन है, लेकिन घर के लोगों पर दुःख की कोई छाप नहीं है। "माँ और बाबूजी तो अन्दर-ही-अन्दर खुश रहने लगे हैं। आश्चर्य यह है कि इक्कीस सालों तक इस घर के साथ जुड़ी सावित्री दीदी का गुजरना इन्हें क्यों नहीं अखर रहा है। चाचा की मृत्यु होने पर तीन-चार महीने तक घर के लोगों के चेहरे गमगीन थे। बचपन से ही सावित्री दीदी को कष्टमय जीवन बिताना पड़ा। माँ उसे सुना सुनाकर कहती 'दस हजार लेगी दस हजार लेने के लिए ही आई है इसे सौरी में ही नमक चटाकर मार देना चाहिए था.... जब हमें कंगाल बनाकर ही यहाँ से जाएगी।"[42]और सावित्री दीदी चुपचाप माँ के तानों ही सुनती रहती। शादी के लिए वर की खोज शुरू हुई तो तेरह हजार, ग्यारह हजार रुपये तिलक की माँग की जाने लगी। आखिर सात हजार तिलक की माँग करने वाले एक लड़के से शादी तय की गई। इसके लिए जमीन बेचना आवश्यक था, लेकिन बाबूजी और भैया में मतभेद हो गया। माँ सावित्री दीदी को भद्दी-भद्दी गालियां देती। अन्त में इन सबसे तंग आकर सावित्री दीदी ने एल्ड्रिन पीकर अपनी जान दे दी।

---

[41] .मिथिलेश्वर,मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियां,इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन,दिल्ली,प्रथम संस्करण:2015,पृ.213।

[42] मिथिलेश्वर,मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियां,(भाग-2),इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन,दिल्ली,प्रथम संस्करण:2015।

'भोर होने से पहले' स्त्री यातना की कहानी है। जमींदारी प्रथा और जमींदार खत्म हो चुके हैं, लेकिन सामंती मनोवृत्ति अभी भी गाँव में कायम है। स्त्री की निकृष्ट और पुरुष की तुलना में हेय मानने की प्रवृत्ति भी कायम है। रविकान्तजी के घर के लड़के नेपाली बहादुर की बेटी बुधनी को बिगाड़कर रख देते हैं और जब वह गर्भवती हो जाती है तो उसकी शादी जबरदस्ती अपने चरवाहे बैजू से कर देते हैं। बैजू अन्तर्द्वन्द में फैस जाता है। अन्ततः बुधनी को लेकर वह गाँव छोड़ देता है। गाँव गर्भवती विधवा और कुमारी स्त्री को कितनी निर्दयता के साथ खत्म करता था, यह भी इस कहानी में बताया गया है। औरत का मुँह बन्द कर उसकी गर्दन के नीचे एक लाठी रखी जाती है और एक लाठी गर्दन के ऊपर। फिर दोनों लाठियों को कसकर दबाया जाता है। इसके बाद जल्द ही उस औरत के प्राण निकल जाते हैं। शरीर पर मारने-पीटने और जलाने का कोई दाग नहीं दिखता।"[43] रविकान्त ने बहादुर की बेटी को अपनी बेटी की तरह माना था। उन्हें अपने भाइयों के बेटों को इस कुकर्म के लिए डॉटना था, लेकिन वे अपने संयुक्त परिवार के अस्तित्व को बचाने के चक्कर में चुप रहे। 'रास्ते' कहानी की सुचित्रा बहुत सुन्दर और शुशील है, लेकिन उसका ब्याह एक विवेकहीन बदसूरत लड़के से कर दिया जाता है। ससुराल वाले आर्थिक दृष्टि से विपक्ष हैं जबकि उन्होंने सम्पन्नता का स्वांग भरा था। लड़की के शादी की चिंता में हुबे सुचित्रा के पिता ने सच्चाई जानने की कोशिश नहीं की। उसकी खुबसूरती का सास और ससुर व्यापार करने लगते हैं। लोग उसे देखने आते हैं और भेंट की चीजें लाते हैं। सुचित्रा को उनकी इस घृणित मनोवृत्ति से कोफ्त होती है और वह उन लोगों के सामने आने से साफ इन्कार कर देती है। सास झूठ बोलती है कि बहू की तबियत खराब है।

---

[43] मिथिलेश्वर,मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियों(भाग-1),इन्द्रप्रस्थ प्रकाशनदिल्ली,प्रथम संस्करन:2015।

सुचित्रा मैट्रिक के आगे की अपनी पढ़ाई शुरू करती है। उसका लक्ष्य आर्थिक स्वावलम्बन प्राप्त करना है। सास के विरोध के बावजूद वह प्रोफेसर शरण से मार्गदर्शन प्राप्त करने जाती है। सास-ससुर सुचित्रा की पढ़ाई का विरोध अपने स्वार्थ को दृष्टि में रखकर करते हैं। उन्हें इस बात की आशंका होने लगी है कि प्रो. शरण उसे समझदार और जागरुक बना देंगे तो वह उनके हाथ की कठपुतली नहीं रह जाएगी। इसलिए वे प्रोफेसर शरण के चरित्र के बारे में गलत जानकारी देते हैं लेकिन सुचित्रा उस पर ध्यान नहीं देती क्योंकि 'जो आदमी अंधेरे में भटकने वालों के समक्ष रोशनी प्रदान करता हो तथा उन्हें जागरुक और आत्मनिर्भर बनाता हो, यह कभी भी त्याज्य नहीं हो सकता।"[44]

"स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी ग्रामीण कहानी की स्त्री जाति पुरुष के विशेषतः अधिकार संपन्न जमींदार जैसे पुरुष वर्ग के शोषण का शिकार रही है। साथ-साथ इसमें शासकीय अधिकारी, अन्य गाँव-गुण्ड तथा पुरोहित-पण्डितों का भी कुछ मात्रा में हाथ दिखाई देता है। गाँव के जमींदार गाँव की छोटी मोटी सुन्दर बहू-बेटियों को भोग का सहज-साधन मानते है। गरीबी से लाचार किसानों की और चारा फेंककर या विभिन्न बहाने बनाकर भित्र-भिन्न तरीकों से यामनारी की अस्मत पर धावा बोलने में में कामयाब होते हैं।"[45]

---

[44] मिथिलेश्वर,मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियां(भाग-3),इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन,दिल्ली,2015,पृ.126,127।

[45] .डॉ।कृष्णा पाटील,हिन्दी की ग्रामीण कहानियों में समाज,विध्या प्रकाशन,2011,पृ.78,79।

4.3 निष्कर्ष

आधुनिक युग में ग्रामीण स्त्री अपने अधिकारों के प्रति सचेत हुई हैं। वह पुरुषों के समान ही सामाजिक, आर्थिक, क्षेत्र में समानता की मांग करने लगी हैं। शहरी स्त्रियों की अपेक्षा ग्रामीण स्त्री, शिक्षा की सुविधाओं के अभाव में आत्मनिर्भर नहीं हैं। ससुराल में पति और ससुर उसे दासी मानते हैं। ग्रामीण स्त्री को मुक्ति के बिना, देश का उद्धार संभव नहीं हैं। मिथिलेश्वर जी ने ग्रामीण स्त्री का यथार्थ स्थिति को कहानियों में अंकित किया हैं।

पंचम अध्याय

मिथिलेश्वर की कहानियों में धार्मिक एवं सांस्कृतिक समस्याएं

मिथिलेश्वर की कहानियों में धार्मिक एवं सांस्कृतिक समस्याएं

"सन् 1950 के बाद हिंदी कहानी के क्षेत्र में 'आंचलिक' नामक एक नई प्रवृत्ति सामने आई। इस प्रवृत्ति का उत्तरोत्तर विकास होता गया। इसके माध्यम से 'सामाजिकता' की जगह 'सांस्कृतिकता' सामने आने लगी। कहानी के परिवेश में लोकजीवन और लोकभाषा का समावेश यथार्थ के धरातल पर होने लगा। अंचल विशेष की जीवन पद्धति, उसकी आस्था, रीति-रिवाज, नृत्य, गीत, तीज-त्योहार, परम्परित मूल्य प्रतिष्ठा आदि कहानियों में पूर्णता के साथ समाहित होने लगे। एक ओर जहां विविध छवियों और ग्राम-जीवन की रीति-रिवाजों, नृत्य, गीत, तीज-त्योहारों का मधुर चित्रण होने लगा वहीं दूसरी ओर समाज में विगलित मान्यताओं' और 'सांस्कृतिक सड़ांध' पर जमकर प्रहार भी होने लगा।"[46]

5.1 खान-पान सम्बन्धी परिवर्तन

"परम्परागत भारतीय समाज में उच्च जाति, खासकर ब्राह्मण शाकाहारी थे, मांस-मदिरा का सेवन नहीं करते थे। यहां तक कि कुछ वर्ग जमीन के नीचे उगने वाली सब्जियां जैसे-आलू, प्याज, लहसुन, चुकन्दर आदि का भी प्रयोग नहीं करते थे, भोजन करने से पहले नहाना अनिवार्य था, खाना जमीन को साफ करके, आसन पर बैठकर भगवान का नाम लेकर किया जाता था, परन्तु अंग्रेजी प्रभाव के कारण इन आदशों में कमी आने लगी। मांस में मुर्गा, सुअर और शराब का प्रयोग होने लगा। भोजन टेबल कुर्सी पर करना प्रतिष्ठा का सूचक बन गया। चम्मच, काँटा, घुरी का प्रयोग तथा बर्तन चीनी मिट्टी एवं स्टील के होने लगे। पारम्परिक भोजन

[46] डॉ.हीरालाल शर्मा, डॉ.महेन्द्र, सामाजिक परिवर्तन में कथा-साहित्य की भूमिका,अनंग प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण:2003,पृ.121।

में चाय, बिस्कुट, बेड, आइसक्रीम, केक शामिल किया जाने लगा। सिगरेट का प्रचलन बढ़ गया।"[47]

'रात'कहानी में जोगिन्दर दुनिया से कहता है कि "अरे, दालान की चौकी पर धुरुपा नहीं झुनिया भी आँख फाड़कर देखती है, धुरुपा नहीं है। जोगिन्दर एक क्षण को मौन बना खड़ा रहता है। फिर धीरे से कहता है, "जरूर गणेश की मड़ई में सो गया होगा। गाँजा पीने वहाँ जाता है।"[48]इस तरह ग्रामीण संस्कृति में भी परिवर्तन हो रहा है।

5.2 रहन सहन में परिवर्तन

"पारम्परिक एवं भारतीय वेशभूषा का प्रचलन नए लोगों में घटने लगा। कोट पेंट पगड़ी की जगह हैट, जूते मोजे, तथा लड़कियां स्कर्ट टॉप धारण करने लगी। ब्राह्मण सिर मुडवाने से परहेज करने लगे तथा लड़कियों बोय कट बाल रखने लगी। अमेरिकी प्रभावित युवा अब अजीचोगरीब बस धारण करने लगे हैं। लड़कियां छोटे से छोटा वत्र एवं लड़के कान-नाक तक बिंधवाने लगे है। लोम नमस्ते एवं प्रणाम जैसे अभिवादन के शब्दों के स्थान पर गुडमॉर्निंग, हाय-हैलो आदि का प्रयोग करते हैं। नए घरेलू उपकरणों का प्रयोग तथा तीज-त्योहारों के अवसरों पर भी पारंपरिक चूल्हों की जगह गैस स्टोर हीटर आदि भोजन पकाया जाने लगा है।"[49] 'अपनी-अपनी जगह' कहानी में मिथिलेश्वर जी ने पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी के रहने सहने में परिवर्तन दिखाया हैं। इस कहानी में बुढ़ा भदई लेखक मिथिलेश्वर जी से कहता हैं कि

---

[47] सुजीत कुमार बसंत, विकास चन्द्र रंजन, भारतीय समाज में परिवर्तन एवं विकास, गगनदीप पब्लिकेशन, मौजपुर, दिल्ली,2008,पृ.08।
[48] मिथिलेश्वर, मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियां,(भाग-१), इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण:2015,पृ.404।
[49] सुजीत कुमार बसंत, विकास चन्द्र रंजन, भारतीय समाज में परिवर्तन एवं विकास, गगनदीप पब्लिकेशन, मौजपुर, दिल्ली,2008,पृ.09।

“मेरे क्वार्टर में कितनी जमीन है, लेकिन मेरा नालायक लड़का उसमें सब्जियाँ नहीं लगाने देता। ऐसा लड़का न जनमता वही ठीक था। “उस बूढ़े की आँखें छलछला आयीं और चेहरा गुस्से से तमतमाने लगा। वह गुस्से में ही बोलने लगा, “चार दिन के छोकरे, नौकरी और रुतबा पाते ही अपने को बुद्धिमान समझने लगते हैं। भला इनको कौन बताए कि फूलों की सुगन्ध से सब्जियों की सुगन्ध का महत्त्व अधिक होता है।”[50]शहरीकरण की वजह से आधुनिक युग की पीढ़ी में परिवर्तन आ रहा है।

5.3 धार्मिक जीवन में परिवर्तन

धर्म का प्रत्येक समाज में अपना विशेष स्थान होता है जिससे सामाजिक क्रिया कलाप प्रभावित होते हैं। अंग्रेजी शासन से पूर्व हिन्दू धर्म में बहुत सारी कुरीतियों एवं पाखण्डों का समावेश हो गया था। आम लोग बेकार डोग एवं पाखण्डों और अंधविश्वास के जाल में घिरे हुए थे। सती प्रथा, जाति प्रथा या धार्मिक छुआछूत, देवदासी प्रथा, पशु-मानव बलि, मृत्यु भोज आदि का बोलबाला था। पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव तथा समाज सुधारकों के प्रयास से बहुत हद तक इन धार्मिक कुरीतियों को कम किया गया। वैज्ञानिक, तार्किक एवं बुद्धिवादी विचारों से धार्मिक आस्था में कमी आई़ बहुत से लोग ईसाई मिश्नरियों के प्रभाव में आकर ईसाई बन गए। शिक्षित लोग धर्म की फिर से मीमांसा करने लगे और उसका मानवतावादी स्वरूप ढूंढ़ने लगे। युवा वर्ग का धर्म में विश्वास कम हुआ है और वे धार्मिक त्योहारों को कम करते हैं। त्याहारों में पाश्चात्य त्योहार जैसे क्रिसमस, नयावर्ष (1 जनवरी) तथा वेलेन्टाईन डे मनाए जाने लगे हैं। जन्म

[50] मिथिलेश्वर, मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियां,(भाग-१), इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण:2015,पृ.287।

दिन पर पूजा-पाठ कम हो, केक काटने व मोमबत्ती बुझाने का प्रचलन बढा है। 'गृह प्रवेश' कहानी में श्रीवास्तव अंधविश्वास तथा कर्मकांड का विरोध करता हैं।

5.4 धार्मिक क्षेत्र में भ्रष्टाचार

"धर्म जो व्यक्ति का आध्यात्मिक कल्याण करता है उसे ईश्वर से सम्बद्ध करता है, उसमें भौतिक गुणों का विकास करता है। कभी आज भ्रष्टाचार से मुक्त नहीं है। लोग मंदिर, मस्जिद और गुरुद्वारा बनवाने ना अनाथालय एवं गौशाला चलाने, यज्ञ-हवन, भजन-कीर्तन करवाने, आदि के नाम पर चन्दा एकत्रित करते हैं और उसका दुरुपयोग करते हैं अथवा अपने निजी हितों के लिए काम में लेते हैं। आज हमें मन्दिर के पुजारियों मस्जिदों के मौलवी और काजी, मतों के महन्तों के विभिन्न भ्रष्टाचारी क्रियाओं में लिप्त होने के अनेक उदाहरण मिल जायेंगे। ये लोग अपने भोले भाले भक्तों दर्शनार्थियों और आस्था रखने वाले लोगों को उगते हैं, लूटते हैं और उनसे पैसा वसूल करते हैं। ज्योतिष एवं धर्म के नाम पर लोगों को आने वाले संकट से बचने के लिए विनिष्ठ प्रकार के दान, या और हवन करने का सुझाव देकर अपना उल्लू सीधा करते हैं। विभित्र प्रकार के रोगों एवं पारिवारिक संकटों से बचने यो लिए, नौकरी लग जाने मा पदोन्नति होने का प्रलोभन देकर ये लोग दूसरों से पैसा ऐंठते हैं। भारत की जनता भी धर्मभीरु है अतः अपना यह लोक और परलोक सुधारने के लिए वे अनेक धार्मिक आडम्बरों, अन्धविश्वासों और पाखण्डों के चक्कर में आ जाते हैं। अनेक बार तो लोग अपने बच्चों तक की बलि दे देते हैं।"[51]

'अभी भी' कहानी में सामाजिक रूढ़ियों का चित्रण किया गया है। हरखू के पिता झगरू बीमार

[51] डॉ.मंजुलता छिल्लर, भारतीय सामाजिक समस्याएं, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस,नई दिल्ली,2022,पृ.105।

है जिसके कारण फुलिया की शादी नहीं होती है। हरखू के पिता झगरू को जलसमाधि देता है। अंधविश्वास और रूढ़ियों के कारण निर्दोष झगरू की बलि दी जाती है। पंडित जी हरखू से यह - कहता है कि," पूरे गांव को भोजन न देकर सिर्फ दस-पंद्रह ब्राह्मणों को खिला दो, बस सब पवित्र हो जाएगा। इसी तरह पंडित आम जनता को लुटते हैं।

मिथिलेश्वर जी ने 'विरासत में' कहानी में गांवों में भूत-प्रेत, झाड़-फूंक और ओझा के तांत्रिक के प्रति अंधश्रद्धा और अंधविश्वास की अभिव्यक्ति हुई है। झकड़बाबा जादू-टोना, मंत्र-तंत्र के चमत्कारों से लोगों को चमत्कृत करता है। अपने भयावह कुँवारेपन का दर्द हल्का करने के लिए तथा जवानी की वासना के कुकृत्यों पर आवरण डालने के लिए झकड़बाबा अपनी जिंदगी में कारनामों और करिश्मों को जन्म देता है। भूत-प्रेत और डायनों को खदेड़ना, ओझाई के नाम पर सीयों की बेरहम पिटाई करना, देवता के नाम पर भारी भोज की माँग करना आदि के लिए रात के अंधेरे में आवाश्यक करतूतें करता है और फिर उसका निवारण करने के लिए स्वयं ही आगे बढ़ता है, प्रतिष्ठा भी प्राप्त कर लेता है। अंधविश्वास का लाभ उठाकर लोगों को पथभ्रष्ट करनेवाले झकड़बाबा की पोल खोलकर मिथिलेश्वर ने उसकी आलोचना की है।

'गृह प्रवेश'कहानी में अंधश्रद्धा को अभिव्यक्त किया है। श्रीवास्तव जी नये मकान में बिना गृह प्रवेश कराए रहते हैं। "नये मकान में विना एक वर्ष पूरा हुए उनकी सबसे छोटी बहन अचानक छत से गिरकर मर गयी। वस, बवाल मच गया। सबने एक स्वर में स्वीकार किया कि विधिवत् गृह-प्रवेश न होने के कारण ही यह हुआ है, अन्यथा साल-माथ लगने से पहले ही नये मकान में मृत्यु कैसे होती? और वह भी छत से गिरकर। श्रीवास्तवजी चुप लगाए रहे। लेकिन

परिवार के लोगों ने उन्हें तंग करके छोड़ दिया। बहन की मृत्यु के बाद से घर में जो कुछ भी होता, गृह-प्रवेश के नाम पर चला जाता। बूढ़ा कुत्ता मर गया, दोष गृह-प्रवेश का। छोटा भाई इंटरव्यू में असफल हो गया, दोष गृह-प्रवेश का। माँ को दिल का दौरा पड़ा, दोष गृह-प्रवेश का। चहन की तय हुई शादी टूट गयी, दोष गृह-प्रवेश का। रात को छत्त पर रखा सामान चोरी चला गया, दोष गृह-प्रवेश का। यानी, घर में जो भी अनिष्ट होता। इन सभी कारण गृह प्रवेश न करने से जोड़ा जाता।

'गूँगा गंगू' कहानी एक ऐसे पंडित के चरित्र को अनावृत्त करती है जो अपनी भविष्यवाणी को सिद्ध करने के लिए कुवृत्तियों के धागे से जाल बुनता है। ढोंगी ज्योतिषियों एवं पंडितों के छल-छद्मा का पर्दाफाश किया है।

'जमुनी' बहुआयामी कहानी है। जमुनी (भैंस) के साथ परिवार के प्रत्येक सदस्य का गहरा लगाव, उससे जुड़ी अपनी-अपनी यादों के साथ, परिवार के साझे जीवन में 'जमुनी' का केन्द्रीय स्थान, परिवार की सारी सुख-सुविधा का मूल स्रोत है। कहानी का यह पक्ष मुझे सबसे अधिक प्रिय लगा...। इसके अतिरिक्त ग्राम्य जीवन में पाए जाने वाले तरह-तरह के विश्वास, अन्धविश्वास, पूर्वाग्रह आदि पर आपकी पकड़, जमुनी की रुग्ण अवस्था के परिप्रेक्ष्य में उनका सविस्तार वर्णन, उनसे जुड़े प्रसंग बड़े स्वाभाविक रूप से, कथानक के अभिन्न अंग बनकर आए हैं"।[52]भारतीय ग्राम-जीवन अपनी प्रकृति और परिवेश में अन्यान्य अज्ञान जनित भूत-प्रेत संबंधी प्रकल्पनाओं को समाहित किए हुए हैं।

---

[52] मिथिलेश्वर, मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियां,(भाग-३), इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण:2015,पृ.12,13।

5.5 निष्कर्ष

मिथिलेश्वर जी ने ग्रामीण जीवन के धार्मिक और सांस्कृतिक पक्ष को उद्घाटित किया है। ग्रामीण समाज अन्धविश्वास एवं अंधश्रद्धा से समित है। जादू-टोना,भूत-प्रेत, चुडैंल, डायन आदि पर लोगों का विश्वास होता हैं। बाझ और विधवा स्त्री को डायन समझा जाता है। ऐसी मान्यता है कि, डायन के सामने पड़ते ही हंसता, खेलता आदमी खाट पकड़ लेता है। बच्चा बीमार है, जानवर बीमार है, आदमी बीमार है, सभी आरोप डायन के माथे मढ़ दिया जाता। कमजोर सामाजिक स्थिति वाली स्त्री पर ओझा डायन का आरोप लगाते हैं। ताकि उनका व्यवसाय निर्बाध गति से चलता रहे। गाँव के रूढ़िवादी और अंधविश्वासी जनता डायन का आरोप वाली स्त्री की हत्या कर देते। ज्योतिष, पंडित अंधविश्वास का फायदा उठाते हैं। पूजा-पाठ के नाम पर धन की बर्बादी कराते हैं। निःसंतान औरतें संतान प्राप्ति के लिए ब्रह्म स्थान, देवासों और पीर के मजारों पर जाती है। ग्रामीण जीवन में आस्था भी मिलती। संकट के समय अपने आराध्य भगवान की स्तुति करते हैं। निम्न वर्ग खान-पान में मोटे अनाज का प्रयोग करते। सामान्तया खान-पान में स्थानीय भू-उपज का प्रयोग किया जाता। बहुसंख्यक जनता मिट्टी और खपरैल से बने साधारण घर का प्रयोग करती। मिट्टी के घर साफ-सुथरे होते। उन दीवारों पर कलाकृतियां बनी होती है।

षष्ठ अध्याय

मिथिलेश्वर की कहानियों की भाषा शैली

मिथिलेश्वर की कहानियों की भाषा शैली

मिथिलेश्वर की कहानियों में देशज भाषा का प्रयोग किया गया है। मिथिलेश्वर जी के कहानी के हर एक पात्र व उसकी परिस्थिति के लिए नए शब्द गढ़ते हैं, नए रंगों से उन्हें रंगाते हैं। कहानियों में हर पात्र की अपनी भाषा है जो उसके अस्तित्व को अभिव्यक्त करती है। मिथिलेश्वर जी ने अपनी कहानियों में आम आदमी की बातचीत उनके मुहावरों लोकोक्तियां कथन भंगिमाओं का बहुत ही सटीक प्रयोग किया है। मिथिलेश्वर की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि उन्हें स्नेह है अपने गांव से, अपने आंचल से, और वहां होने वाले तीज त्योहारों से उन्हें लगाव हैं।

ग्रामीण कहानीकार जिस अनुभव, निरीक्षण और व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर कहानी का निर्माण करता है। वे सभी तत्व हमें मिथिलेश्वर की कहानियों में स्पष्ट दिखाई देते हैं। ग्रामीण कहानियों में जिस यथार्थ के महत्ता है उसे यथार्थ को स्थापित करने के लिए भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है जो की मिथिलेश्वर की कहानियों में देखने को मिलता है।

"मिथिलेश्वर की कहानियों की शिल्प-संरचना में बिम्बों, प्रतीकों, लोकोक्तियों एवं मुहावरों का सम्यक समावेश है। देशज शब्दावली का यथास्थान सुन्दर समावेश किया गया है। ये कहानियां कहीं भी बोझिल और उबाऊ नहीं लगती। सहज कथा- प्रवाह सर्वत्र बना हुआ है। इन कहानियों के आधार पर कहां जा सकता है कि मिथिलेश्वर जीवन और समाज के बहुरंगी यथार्थ के संजीव कथाकार है...।"[53] भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम ही भाषा है। भाषा जितनी

[53] मिथिलेश्वर, मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियां (भाग-3), इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण,2015,पृ.08।

सरल, सरस और भावाभिव्यंजक होती है। वह उतनी प्रभावशाली होती है। कथा की भाषा सरस, सरल एवं बोधगम्य होने पर पाठक अधिक प्रभावित होती है। मिथिलेश्वर की भाषा सरल,सहज एवं बोधगम्य है। प्रचलित एवं बोलचाल की भाषा उनके साहित्य की खुबी है। पात्रों के अनुकूल भाषा का प्रयोग करते हैं। ग्राम जीवन के पात्र भोजपुरी भाषा में बात करते हैं, जो पात्रों के अनुकूल भाषा है। इनके साहित्य में कहावतों एवं मुहावरों का प्रयोग, गीतों का प्रयोग भोजपुरी तथा स्थानीय शब्दों के प्रयोग से अपनी भाषा को सुंदर एवं संप्रेषण युक्त बनाया है। 'आलोचना 93 अप्रैल-जून, 1990 में लिखा गया है कि "मिथिलेश्वर की कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उनमें कलात्मक बनाव-सिंगार के बगैर मन को छू लेने वाला कहानीपन मौजूद है...।"[54]

डॉ. नामवर सिंह ने लिखा है कि, "मिथिलेश्वर की 'हरिहर काका' कहानी का कथ्य इतना सशक्त है कि बिना बनाव-सिंगार के भी पूरा असर डालता है। मिथिलेश्वर का मीधे-सीधे सपाट ढंग से किस्सा कहना मुझे अच्छा लगता है। कुछ लोगों को शायद इसमें कला हीनता दिखाई पड़े। एक और मठ और दूसरी और अपने भाइयों की बीचतान में हरिहर काका आज के सामंती-पुरोहिती उत्पीड़न को पूरे तीखेपन से उत्भारकर सामने लाते हैं। मिथिलेश्वर के कथा साहित्य में भोजपुरी जिले के ग्राम जीवन का चित्रण के साथ भोजपुरी शब्दों का प्रयोग इनके साहित्य की सुन्दरता को बढ़ाते हैं।"[55] मिथिलेश्वर जी ने अपने कथा साहित्य में भोजपुर जिले के ग्राम जीवन का चित्रण के साथ भोजपुरी शब्दों का प्रयोग किया गया है।

---

[54] मिथिलेश्वर, मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियां,(भाग-1), इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, प्रथम संस्करण:2015,पृ.10।
[55] मिथिलेश्वर, मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियां(भाग-2), इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, प्रथम संस्करण:2015,पृ.07।

6.1 लोकगीत

लोकगीतों में जनमानस की मनःस्थिति, सुख-दुःख, व्रत-त्यौहार, जन्म, मृत्यु, संस्कार आदि की मनःस्थिति छिपी होती है जिसे लयात्मक रूप से व्यक्त किया जाता है। उदाहरण-

क) "जाहू हम जनिती धियबा कोखी रे जनमिहे।

पिहितों में मरिच धराई है।

मरिच के शाके- झुके धियवा मरि जाइति,

छुटि जाइते गरूआ सन्ताप रे,।"[56]

ख) "अमवा महुइया मोजरइले हो रामा, चइता मासे।"[57]

ग) बरि पहर रति जल-थल सेईले

सेईले चरण तोहार

छठी मइया…

दुखवा हरना हमार…।"[58]

6.2 पात्रानुकूल भाषा

मिथिलेश्वर जी के कहानियों में भाषा पात्रों के अनुकूल होने से रोचकता बढ़ जाती है। मिथिलेश्वर ने अपने रचना में पात्रों के अनुकूल भाषा का प्रयोग किया है।

उदाहरण-

[56] मिथिलेश्वर, मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियां (भाग-1), इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, प्रथम संस्करण:2015,पृ.18।

[57] मिथिलेश्वर, मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियां,(भाग-3), इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण:2015,पृ.17।

[58] मिथिलेश्वर, मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियां (भाग-3), इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण:2015,पृ.33।

"तुम्हीं सोचो, ऐसे कब तक चलेगा? मैं तुमको खाना देता हूँ, तुम्हारे घर-भर को नहीं। रोज तुम बहाना बनाकर खाना घर ले जाते हो। बीवी-बच्चों को खिलाने से मेरे घर का काम तुमसे नहीं होगा। चुपचाप डटकर यहीं खाया करो!" वे थोड़ा इत्मीनान में हो लेते हैं। फिर कहते हैं' 'जानते हो, दुनिया में कोई किसी का नहीं होता है। तुम झूठमूठ की इज्जत बान्हे चलते हो। चुपचाप झुनिया को कह दो, आकर मेरे घर गोबर पाथा करे, दोनों जून खाया करेगी। और धुरुपा!..... दिन-पर-दिन साला बिगड़ता जा रहा है। सीधे मन में किसी के यहाँ उसे चरवाहा रख दो। बस, मारते रहो मजा।"[59]

6.3 मिश्रित भाषा

मिथिलेश्वर की कहानियों में हिन्दी-अंग्रेजी-भोजपुरी इत्यादि मिश्रित भाषा का प्रयोग किया है।

उदाहरण -

क) "मेहर को माथे पर बड़ा लिया है…।मउगड़ा है। औरत तो मर्द के पाँव की जूती होती है.... उसे बराबरी का दर्जा क्या देना..... अगर नाक नहीं होती तो औरतें मैंला खातीं धर्मशास्त्रों में भी औरत का दर्जा मर्द के नीचे ही दिया गया है.....।"[60]

---

[59] मिथिलेश्वर, मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियां (भाग-1), इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण:2015,पृ.38।
[60] मिथिलेश्वर, मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियां,(भाग-2), इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण:2015,पृ.20।

ख) "कल हम सब नगर के कलेक्टर, एस.पी. और म्यूनिसिपैलिटी के चेयरमैन से मिलेंगे। इस घटना पर शहर के लोगों में जनमत जगाएँगे। उस जमीन में वर्षों से हमारे बच्चे पढ़ते आ रहे हैं। वह जमीन हाजी सेठ के बाप की नहीं है।"[61]

6.4 मुहावरे एवं कहावते

मिथिलेश्वर ने कहानियों में मुहावरों और कहावतों का सुंदर प्रयोग क्या है।

कहावतें

"उल्टे,कहे अंगूर कौन खाए।"[62]

मुहावरे

'भोर होने से पहले' कहानी में मुहावरे का प्रयोग किया गया है।

"जिस थाली में खाना, उसी में छेद करना...।"[63]

डूब मरना, बजार में आग लगना, होंठ मिलना, फूटी हकौड़ी हासिल न होना, गड़े-मुर्दे उखाड़ना, कमर कमना, हाहें हरदी न लगना, छव-पाँच में न पड़ना, बुल्लू भर पानी में डूब मरना, मुंह बंद करना, माथे पर चहना, पाँव की जूती इत्यादि।

6.5 भोजपुरी शब्द

---

[61] वहीं से,पृ.47।

[62] मिथिलेश्वर, मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियां (भाग-3), इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण: 2015,पृ.146।

[63] मिथिलेश्वर, मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियां (भाग-3), इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण:2015,पृ.27।

छाटांक, मुआर, बच्चू, फींचने, पगहा, बरिआर, गड़ही, ढिबरी, बिछावन, सेतिहा, दुभुकना, लुआठी, गोहराना, सपरता, कुभाखर, पागुर, थउसी, करसी, सिझा, भखौती, माहूर, पोसी, चुहानी, बिलमेगी, बोरिया, सेआन इत्यादि।

6.6 शिल्प

"शिल्प अपने में कोई निरपेक्ष इकाई नहीं है। प्रत्येक अनुभूति अपने लिए उचित माध्यम तथा अपनी सशक्त अभिव्यक्ति के लिए उपकरणों की मांग करती है। अपने कथ्य को सही ढंग से अभिव्यक्त करने के उद्देश्य से लेखक असंख्य सम्भावनाओं में से कुछेक को चुनने के लिए विवश होता है और चुनने की यह प्रकिया ही शिल्प-चेतना है। इस दृष्टि से विचार करने पर शिल्प रूपवादी, रीतिवादी सीमाओं से मुक्त होकर लेखक के उद्देश्य से जुड़ जाता है। यह भी कहा जा सकता है कि शिल्प एक प्रकार से कथ्य का ही विस्तार है।"[64]

आधुनिकता और आंचलिकता में विरोध दिखाई पड़ता है। "आंचलिकता के ठीक विरुद्ध आधुनिकता का मूल स्वर विद्रोह अथवा विरोध का स्वर, सांस्कृतिक शून्यता का स्वर है। वह यथार्थ की कड़ी जमीन पर अपने युग को झेलने का क्रम है। उसमें परम्परा और व्यवस्था की सुरक्षा नहीं है। पुरानी प्रतिमा की पुनर्स्थापना की जगह उसमें प्रतिमा-भंजन की मुद्रा है।"[65]

'तीन यार' कहानी में मिथिलेश्वर जी ने प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग किया जाता है। "सलवार-कमीज पहने और दुपट्टा ओढ़े एक सत्रह अठारह साल की लड़की उघर से गुजरी। लड़की को देखते ही एक ने कहा, 'नयी चिड़िया है।"

---

[64] हरिकृष्ण कौल,फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियां शिल्प और सार्थकता, भारतीय भाषा केंद्र, भाषा संस्थान, नई दिल्ली,1978,पृ.44।
[65] डॉ.विवेकी राय, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा-साहित्य और ग्राम जीवन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण :1974,पृ.428।

दूसरे ने कहा, “चिड़िया का रंग सुनहला है।

तीसरे ने कहा, “चिड़िया पालने लायक है।”[66]

---

[66] मिथिलेश्वर, मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियां (भाग-3), इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण:2015,पृ.150।

6.7 निष्कर्ष

मिथिलेश्वर कहानी का आरम्भ ऐसे तकनीक से करते हैं कि पाठक का कुतूहल जाग उठता है। वह आगे जानने की जिज्ञासा में लग जाता है। और कहानी को एक सॉस में पढ़ डालता है। शहरी परिवेश की अपेक्षा गाँवों को केंद्र बिंदु बनाकर लिखी गयी कहानियाँ अधिक सशक्त है। समस्याओं की पुनरावृत्ति अधिक है। उनमें गाँव की सांस्कृतिक एवं सरस जीवन का अभाव है। मिथिलेश्वर की कहानियों में स्वातांत्र्योत्तर काल के ग्रामों के यथार्थ का चित्रण है। भाषिक संरचना में उन्होंने मध्यम मार्ग अपनाया है। पात्र आंचलिक है, लेकिन उन्हें संर्वदेशीय बनाने के लिए आँचलिक भाषा को खड़ी बोली में घुलाया गया है। दैनिक व्यवहार के आँचलिक शब्द स्वाभाविक रूप से आ गए हैं। गाँवों के बारे में छायावादी दृष्टिकोण न अपनाने के कारण मिथिलेश्वर ने अपनी कहानियों के शिल्प एवं भाषा को यथार्थवादी आधार दिया है। शिल्प और भाषा में यदि किसी को अनगढ़पन दिखे तो वही कहना होगा कि इस अनगढ़पन का स्वाद अप्रतिम और अद्भुत है।

संदर्भ सूची

1. डॉ.कृष्णा पाटील, हिन्दी की ग्रामीण कहानियों में समाज, विद्या प्रकाशन,प्रथम संस्करण 2011।

2. देवेन्द्र चौबे, समकालीन कहानी का समाजशास्त्र, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली,2011।

3. नामवर सिंह, प्रेमचन्द और भारतीय समाज, राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2010।

4. पुष्पलाल सिंह, समकालीन कहानी नया परिप्रेक्ष्य,सामयिक बुक्स,नई दिल्ली,प्रथम संस्करण 2011।

5. डॉ.मंजुलता छिल्लर, भारतीय सामाजिक समस्याएं,अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली,2022।

6. डॉ. महेन्द्र रघुवंशी, कहानीकार मिथिलेश्वर एवं आनंद यादव,विद्या प्रकाशन,2014।

7. डॉ.रमेश जगताप,मिथिलेश्वर के कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन: एक अध्ययन,चन्द्रलोक प्रकाशन,कानपुर।

8. डॉ.विवेकी राय,स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा- साहित्य और ग्राम जीवन,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1974।

9. डॉ०वर्षा मिश्र, मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण यथार्थ,रामबाग, कानपुर,2004।

10. डॉ.सुकुमार, भंडारे, हिन्दी कहानी आदि से आज तक,अमन प्रकाशन, राजबाग कानपुर,2015।

11. सुजीत कुमार बसंत, विकास चन्द्र रंजन, भारतीय समाज में परिवर्तन एवं विकास, गगनदीप पब्लिकेशन,मौजपुर, दिल्ली,2008।

12. सब्यसाची भट्टाचार्य,आधुनिक भारत का आर्थिक इतिहास, राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली।

13. सरस्वती पाण्डेय, गोविन्द पाण्डेय, हिन्दी भाषा एवं साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास, अभिव्यक्ति प्रकाशन,इलाहाबाद,2022।

14. डॉ.हीरालाल शर्मा, डॉ०महेन्द्र, सामाजिक परिवर्तन में कथा साहित्य की भूमिका, अनंग प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2003।

15. डॉ.हरिशंकर दुबे,फणीश्वरनाथ रेणु: व्यक्तित्व एवं कृतित्व,विकास प्रकाशन,कानपुर, प्रथम संस्करण,1992।

आधार ग्रंथ

1. मिथिलेश्वर, मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियां (भाग-1), इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली,प्रथम संस्करण 2015।

2. मिथिलेश्वर, मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियां (भाग-2), इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण2015।

3. मिथिलेश्वर, मिथिलेश्वर की सम्पूर्ण कहानियां (भाग-3), इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण2015।